राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर,सोमवार, 25 मई 2026

वर्ष 14, अंक 46, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

बांग्लादेश डिपोर्ट किए गए कुछ लोगों को वापस भारत लाया जाएगा...03

त्विषा शर्मा मौत मामले में समर्थ सिंह को नहीं मिली राहत....04

माता-पिता आईएएस अधिकारी हों तो उनके बच्चे को आरक्षण क्यों?: सुप्रीम कोर्ट

● क्या आरक्षण का लाभ उठाकर आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत हो चुके संपन्न परिवारों को आगे भी इस कोटे का फायदा मिलते रहना चाहिए?

नई दिल्ली, सुप्रीम कोर्ट ने आरक्षण व्यवस्था में 'क्रीमी लेयर' (उन्नत वर्ग) को लेकर एक बार फिर गहरा सवाल उठाया है। न्यायमूर्ति बी.वी. नागरत्ना और न्यायमूर्ति उज्जल भुयान की पीठ ने गुरुवार को सुनवाई के दौरान टिप्पणी की, 'अगर दोनों माता-पिता आईएएस अधिकारी हैं तो उनके बच्चों को आरक्षण की क्या जरूरत? शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण के साथ सामाजिक गतिशीलता आती है। फिर बच्चों को आरक्षण देने की मांग क्यों? इससे हम कभी इस व्यवस्था से बाहर नहीं निकल पाएंगे। '

यह टिप्पणी कर्नाटक हाईकोर्ट के एक आदेश को चुनौती देने वाली याचिका की सुनवाई के दौरान आई। याचिकाकर्ता राघवेंद्र फकीरप्पा चंद्रनावर ने ओबीसी आरक्षण का लाभ लेने से इनकार किए जाने के फैसले को चुनौती दी थी। उनके माता-पिता राज्य सरकार के कर्मचारी हैं और परिवार की वार्षिक आय आठ लाख रुपये से अधिक बताई जा रही है, जिसके आधार पर उन्हें 'क्रीमी लेयर' मानकर आरक्षण से वंचित रखा गया।

कोर्ट का तर्क

पीठ ने मौखिक रूप से टिप्पणी की कि आरक्षण का उद्देश्य सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों को मुख्यधारा में लाना है। जब कोई परिवार आरक्षण का लाभ लेकर आईएएस-आईपीएस जैसी उच्च पदों तक पहुंच जाता है और आर्थिक रूप से मजबूत हो जाता है, तो अगली पीढ़ी को फिर आरक्षण का लाभ क्यों मिलना चाहिए? न्यायमूर्ति नागरत्ना ने कहा, 'शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण के साथ सामाजिक गतिशीलता आती है। ऐसे परिवारों को आरक्षण व्यवस्था से बाहर निकलना चाहिए। 'कोर्ट ने इस मामले में केंद्र और संबंधित राज्यों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। यह टिप्पणी मात्र एक याचिका तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे देश में आरक्षण नीति पर चल रही व्यापक बहस को नई दिशा दे रही है।

पृष्ठभूमि भारत में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए 1992 के इंद्रा साहनी मामले में सुप्रीम कोर्ट ने 'क्रीमी लेयर' सिद्धांत स्थापित किया था। इसके तहत सामाजिक और आर्थिक रूप से उन्नत लोगों को आरक्षण से बाहर रखा जाता है। वर्तमान में केंद्र सरकार के दिशानिर्देशों के अनुसार, ग्रुप ए या क्लास।अधिकारी (जैसे आईएएस, आईपीएस) के बच्चे सामान्यतः क्रीमी लेयर माने जाते हैं।

हालांकि, कई मामलों में व्याख्या को लेकर विवाद रहता है। मार्च 2026 में सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया था कि क्रीमी लेयर का निर्धारण केवल माता-पिता की आय पर नहीं, बल्कि उनकी पद-स्थिति और सामाजिक हैसियत को ध्यान में रखकर होना चाहिए।

राजनीतिक और सामाजिक प्रतिक्रियाएं इस टिप्पणी ने देशभर में चर्चा छेड़ दी है।

– समर्थन: कई विशेषज्ञों और सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि यह टिप्पणी आरक्षण को वास्तविक जरूरतमंदों तक पहुंचाने की दिशा में सकारात्मक कदम है। वे तर्क देते हैं कि आरक्षण अनंतकाल तक नहीं चल सकता और इसे पीढ़ी दर पीढ़ी विस्तारित नहीं करना चाहिए।

– विरोध: कुछ दलित और पिछड़े वर्ग के संगठनों ने चिंता जताई है कि यह सामाजिक न्याय की नींव को कमजोर कर सकता है। उनका मानना है कि जातिगत भेदभाव अभी भी मौजूद है और आर्थिक स्थिति अकेले सामाजिक पिछड़ेपन को मिटा नहीं सकती।

विपक्षी दलों ने भी सरकार पर निशाना साधा है और कहा कि आरक्षण पर सुप्रीम कोर्ट के सवाल से साबित होता है कि केंद्र की नीतियां पिछड़े वर्गों के हितों की रक्षा नहीं कर पा रही हैं।

व्यापक प्रभाव

यह मामला केवल ओबीसी तक सीमित नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने पहले 2024 में एससी/एसटी आरक्षण में सब-क्लासिफिकेशन को मंजूरी दी थी और क्रीमी लेयर को इन श्रेणियों में लागू करने पर भी विचार किया जा रहा है। यदि यह सिद्धांत एससी/एसटी पर भी लागू होता है तो आरक्षण नीति में बड़ा परिवर्तन हो सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी आरक्षण को समय-समय पर समीक्षा करने और इसे अधिक न्यायसंगत बनाने का संकेत है। हालांकि, अंतिम फैसला आने में समय लग सकता है क्योंकि यह संवेदनशील मुद्दा है।

सरकार ने अभी तक औपचारिक प्रतिक्रिया नहीं दी है, लेकिन सूत्रों का कहना है कि केंद्र इस मामले पर सतर्कता से नजर रख रहा है और आवश्यक दस्तावेज कोर्ट में पेश करेगा। आरक्षण भारत की सामाजिक न्याय व्यवस्था का आधार स्तंभ रहा है। सुप्रीम कोर्ट का यह सवाल याद दिलाता है कि इसका उद्देश्य सशक्तिकरण है, न कि स्थायी विशेषाधिकार। अब देखना यह है कि इस बहस का अंतिम निष्कर्ष क्या निकलता है और इससे लाखों युवाओं के भविष्य पर क्या असर पड़ता है।

विनेश फोगाट को दिल्ली हाईकोर्ट से राहत

● अयोग्य घोषित करने के फैसले पर कोर्ट ने डब्ल्यूएफआई को फटकारा

● विनेश फोगाट को दिल्ली हाई कोर्ट से बड़ी राहत मिली है, जिससे उन्हें 2026 एशियाई खेलों के चयन ट्रायल में भाग लेने की अनुमति मिल गई है।

ब्यूरो प्रयागराज। दिल्ली हाई कोर्ट ने शुक्रवार को भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) को फटकार लगाई। डब्ल्यूएफआई ने पहलवान विनेश फोगाट को घरेलू टूर्नामेंट में हिस्सा लेने के लिए अयोग्य घोषित कर दिया था। कोर्ट ने केंद्र सरकार से कहा कि वह फोगाट का मूल्यांकन करने के लिए एक विशेषज्ञ पैनल बनाए। चीफ जस्टिस डी.के. उपाध्याय और जस्टिस तेजस करिया की बेंच ने केंद्र सरकार से यह भी सुनिश्चित करने को कहा कि फोगाट को आने वाले एशियन गेम्स के सिलेक्शन ट्रायल में हिस्सा लेने की इजाजत दी जाए। विनेश मातृत्व अवकाश के बाद खेल में वापसी करना चाहती हैं। पीठ ने टिप्पणी की कि डब्ल्यूएफआई का शीर्ष खिलाड़ियों को भाग लेने की अनुमति देने की पूर्व प्रथा पर नहीं चलना 'बहुत कुछ कहता है'।

पीठ ने इस बात पर जोर दिया कि देश में मातृत्व का जश्न मनाया जाता है और संघ को 'प्रतिशोध' की भावना से कार्य नहीं करना चाहिए। अदालत ने केंद्र से फोगाट का मूल्यांकन करने के लिए एक विशेषज्ञ पैनल गठित करने को कहा। हाईकोर्ट ने मौखिक रूप से कहा, 'विशेषज्ञों से उसकी संभावनाओं का मूल्यांकन करने को कहें। यह सुनिश्चित करें कि वह भाग ले सके।' इससे पहले 18 मई को हाई कोर्ट ने विनेश फोगाट को 30 और 31 मई को होने वाले एशियन गेम्स चयन ट्रायल में शामिल होने की अनुमति देने से इनकार कर दिया था। वहीं, डब्ल्यूएफआई ने हाल ही में विनेश को कारण बताओ नोटिस जारी किया था और जून 2026 तक घरेलू टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए अयोग्य घोषित किया था। विनेश ने इस नोटिस को चुनौती दी थी जिस पर हाई कोर्ट में आज सुनवाई हुई।

डब्ल्यूएफआई ने हाल ही में अनुशासनहीनता और डोपिंग विरोधी नियमों के उल्लंघन के आरोपों पर विनेश को नोटिस भेजा था।इतना ही नहीं विनेश जून 2026 तक घरेलू टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए अयोग्य घोषित की गई क्योंकि उन्होंने यूडब्ल्यूडब्ल्यू के डोपिंग रोधी नियम के तहत संन्यास से वापसी के बाद जरूरी छह महीने का नोटिस पीरियड नहीं दिया है। यूडब्ल्यूडब्ल्यू ने अपने पत्र में यह भी स्पष्ट किया था कि यदि विनेश दोबारा कुश्ती में वापसी करना चाहती हैं, तो उन्हें आईटीए या इंटरनेशनल फेडरेशन को कम से कम छह महीने पहले सूचना देनी होगी और इस दौरान एंटी-डोपिंग टेस्टिंग के लिए उपलब्ध रहना होगा। 15 पन्नों के नोटिस में, डब्ल्यूएफआई ने आरोप लगाया था कि विनेश के आचरण ने राष्ट्रीय स्तर पर शर्मिंदा किया है जिससे भारतीय कुश्ती की छवि को नुकसान पहुंचा है। डब्ल्यूएफआई ने विशेष रूप से उल्लेख किया था कि विनेश इस वर्ष 26 जून तक किसी भी घरेलू प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पात्र नहीं है, जिसमें गोंडा में 10 से 12 मई तक होने वाला राष्ट्रीय ओपन रैंकिंग टूर्नामेंट भी शामिल था।

फोगाट के विकील ने क्या कहा?

फोगाट के सीनियर वकील ने बेंच से गुजारिश की कि उन्हें ट्रायल में हिस्सा लेने का मौका दिया जाए. वकील ने दलील दी कि 9 मई को फोगाट को एक 'कारण बताओ नोटिस' (show-cause notice) जारी किया गया था. यह नोटिस गोंडा में होने वाले एक घरेलू टूर्नामेंट में उनके हिस्सा लेने से ठीक एक दिन पहले जारी किया गया था। वकील ने कहा कि इस नोटिस से साफ ज़ाहिर होता है कि कोई उन्हें बाहर निकालने के लिए हर मुमकिन कोशिश कर रहा है। कोर्ट ने इस 'कारण बताओ नोटिस' पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की. कोर्ट ने कहा कि पेरिस ओलंपिक्स में फोगाट का बाहर होना पूरे देश के लिए शर्म की बात थी. कोर्ट ने यह भी सवाल उठाया कि आखिर यह क्यों न मान लिया जाए कि WFI ने जान-बूझकर फोगाट को बाहर करने के लिए सिलेक्शन के नियमों में बदलाव किया है।

संक्षिप्त ख़बरें

चौरी खास में जल मिशन की सप्लाई ठप, भीषण गर्मी में ग्रामीण परेशान

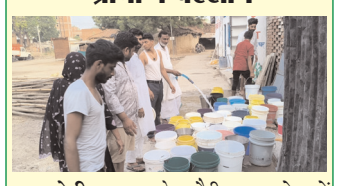

भदोही जनपद के चौरी खास क्षेत्र में जल जीवन मिशन की पानी सप्लाई पिछले एक सप्ताह से बाधित है। जानकारी के अनुसार चोर पानी सप्लाई से जुड़ी केबल काटकर ले गए, जिसके चलते पूरे गांव में पानी की आपूर्ति बंद हो गई है। भीषण गर्मी में लगभग 5000 की आबादी को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। प्रधान पति महबूब आलम ने बताया कि करीब दो माह पहले भी चोरों द्वारा केबल काट लिया गया था। काफी प्रयास और मरम्मत के बाद पानी सप्लाई दोबारा चालू हो सकी थी, लेकिन एक सप्ताह पूर्व फिर चोर तार काट ले गए, जिससे पूरे गांव की जलापूर्ति ठप हो गई है। ग्रामीणों का कहना है कि पानी की समस्या के कारण लोगों को दूर-दराज से पानी लाना पड़ रहा है। सिकंदर मंसूरी, हर्ष कुमार गुप्ता, पेशकार, मेहंदी लाल, छोटे लाल, राजन सहित अन्य ग्रामीणों ने प्रशासन और संबंधित विभाग से जल्द से जल्द पानी सप्लाई बहाल कराने की मांग की है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि भीषण गर्मी के इस मौसम में सरकार के जल आपूर्ति संबंधी दावे पूरी तरह फेल नजर आ रहे हैं। लोगों ने चेतावनी दी कि यदि जल्द समस्या का समाधान नहीं हुआ तो आंदोलन करने को मजबूर होंगे।

मंगलवार 26 मई को श्री राघव जी मंदिर में हनुमान जी का श्रृंगार व भंडारे का आयोजन

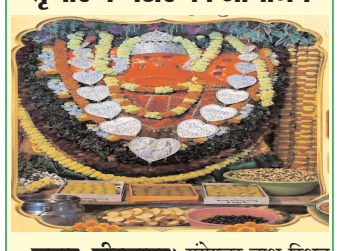

चुनार, मीरजापुर। गंगेश्वर नाथ स्थित श्री राघव जी हनुमान मंदिर में मंगलवार 26 मई को सायं सात बजे हनुमान जी का श्रृंगार व विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। सभी श्रद्धालुओं से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर प्रसाद ग्रहण करें।

कप्तानगंज ब्लाक परिसर बना मयखाना, महंगी गाड़ियों से चेस करने पहुँच रहे जरूरतमंद

● कुछ ग्राम पंचायतों में कागजी हाजिरी का खेल बदस्तूर जारी, आखिर कब टूटेगी बीडीओ की रहस्यमयी चुप्पी सेवा के अंतिम पड़ाव में पहुँचे बीडीओ हिसाब- किताब में मस्त, विभाग की भूले मर्यादा

बस्ती। बस्ती जिले के विकास खंड कप्तानगंज में ऐसा अनोखा मामला देखने को मिल रहा है शाम होते ही सुरा का असली असर देखना हो तो कप्तानगंज विकास खण्ड मुख्यालय आ जाइए क्योंकि यहां पर 'जाम से जाम' लड़ाने का कोई निर्धारित समय नहीं है जब मन हुआ तभी जरूरतमंद शुरू हो जाते है जिसके कारण ब्लाक परिसर मयखाने में तब्दील हो गया है कहना अतिश्योक्त नही होगा। विकास के नींव की शुरुआत करने वाला विकास खण्ड कप्तानगंज का मुख्यालय खुद के ही विकास से अछूता रह गया क्यों कि यहाँ विकास की बातें दिवास्वप्न जैसी हैं। यहाँ के जिम्मेदार तो दिन ही से जाम लगाना शुरु कर देते हैं और परिसर मयखाने में तब्दील हो जाता है।

सेवा के अंतिम पड़ाव पर पहुंचे खण्ड विकास अधिकारी ब्लाक का विकास करने के बजाय खुद के विकास व लेखा- जोखा दुरुस्त करने में लगे हैं। दूसरों के विकास का जिम्मा संभालने वाले ब्लाक के कर्मचारी, ब्लाक क्षेत्र के विकास के बजाय खुद के विकास में मशगूल हैं।इसी बीच क्षेत्र की कुछ ग्राम पंचायतों में मनरेगा कार्यों को लेकर कागजी हाजिरी का खेल भी थमने का नाम नहीं ले रहा है, जहां धरातल पर कार्य की स्थिति और अभिलेखों में दर्ज विवरण में स्पष्ट अंतर पाया जा रहा है, जबकि कागजों में सब कुछ दुरुस्त दिखाया जा रहा है। वहीं बीडीओ की रहस्यमयी खामोशी भी लोगों के बीच तरह-तरह की चर्चाओं का विषय बना हुआ है। अब लोग पूछने लगे हैं कि आखिर इस खेल पर लगाम कब लगेगी क्योंकि यदि ब्लाक के किसी भी कर्मचारी मय बीडीओ की यदि सही तरीक से जाँच हो जाए तो लगभग बहुतों चेहरे बेनकाब हो जाना तय है। ब्लाक कर्मचारियों को अपनी असलियत यदि जानना है तो हिम्मत करके एक शिकायत पेटिका टंगवाकर देख लें जनता व पीड़ित उनकी कलई खोलकर रख देंगें। अब देखना यह है कि जनपद के तेजतर्रार सीडीओ व्यवस्था व कप्तानगंज ब्लाक मुख्यालय की कार्य प्रणाली में कुछ सुधार ला पाते हैं या ऐसे ही विभाग की इज्जत नीलाम होती रहेगी या फिर योजनाओं को छकाने और जाम से जाम लड़ाने का यह सिलसिला यूं ही चलता रहेगा।

लखनऊ एक्सप्रेसवे के फतेहाबाद टोल प्लाजा पर आग, बिना टोल के निकलीं गाड़ियां

फतेहाबाद (आगरा)। लखनऊ एक्सप्रेसवे के फतेहाबाद टोल प्लाजा के कंट्रोल रूम में शुक्रवार रात आग लग गई। इससे पूरे सर्वर सिस्टम के साथ ही अन्य उपकरण भी जल गए। सर्वर और कंट्रोल सिस्टम ठप होने के कारण टोल प्लाजा कुछ समय के लिए पूरी तरह टोल फ्री हो गया। वाहन बिना टोल टैक्स दिए ही गुजरते रहे।

सर्वर, कंप्यूटर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जल गए

लखनऊ एक्सप्रेस वे के फतेहाबाद टोल प्लाजा पर रात आठ बजे कंट्रोल रूम के एयर कंडीशन में शार्ट सर्किट होने से आग लग गई। कुछ ही देर में लपटों ने विकराल रूप ले लिया। देखते ही देखते भीषण लपटें सर्वर रूम तक पहुंच गईं। जहां लगे सर्वर, कंप्यूटर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जल गए। हादसे के बाद टोलकर्मियों में भगदड़ मच गई।दमकल विभाग की टीम मौके पर पहुंची और एक घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया।

बच्ची की मौत के मामले में प्रधानाचार्य गिरफ्तार, जर्जर स्कूली बस के टूटे फर्श से नीचे गिरकर हुआ था दर्दनाक हादसा

गंगीरी (अलीगढ़)। जर्जर बस के टूटे फर्श से बच्ची की मौत के मामले पुलिस ने अब स्कूल के प्रधानाचार्य अनिल कुमार को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। वह आगरा के सदर क्षेत्र स्थित मोहल्ला नैनाना जाट के हैं। हादसे के बाद वह स्कूल आए थे। रास्ते में गांव पकड़ लिया। इससे पहले बस चालक व स्कूल प्रबंधक जेल भेजे जा चुके हैं। बस मालिक प्रबंधन की पत्नी है। विवेचना के दौरान मुकदमे में इनका नाम शामिल किया गया, जो कि फरार हैं। दादों क्षेत्र के गांव भाय निवासी रवि कुमार का जनसेवा केंद्र हैं। गांव हुसैनपुर में रह रहे हैं। यहां से 12 किलोमीटर गांव भुड़िया स्थित माउंट देव इंटरनेशनल स्कूल में उनकी सात वर्षीय बेटी अनन्या यूकेजी में पढ़ती थी। बड़ा बेटा गोलू तीसरी कक्षा में पढ़ता था। स्कूल की बस नंबर यूपी 81-बीटी-8873 से आते-जाते थे। 28 फरवरी को भी इस बस से दोनों बच्चे स्कूल गए। छुट्टी होने पर बस 50 बच्चों को लेकर रवाना हुई। कासगंज में ढोलना क्षेत्र के गांव बिरहरा का चंद्रपाल बस चला रहा था।

वह ढोलना के गांव छिछोरा, किनावा, नगला भूड़ छोड़ते हुए दोनों भाई-बहन के घर के लिए गंगीरी आ रहा था। अनन्या कंडक्टर साइड की सीट थी। भाई दूसरी सहित छह बच्चे और बस में थे। दोपहर करीब ढाई बजे ढोलना के गांव नगला बंजारा के निकट ब्रेकर पर बस उछली तो अनन्या बस के टूटे फर्श के हिस्से में होकर नीचे जा गिरी और पिछले पहिये के नीचे आ गई। भाई के चीखने पर चालक ने बस रोकी। लहुलुहान अनन्या को लाकर सीट पर लिटा दिया। बस को गंगीरी क्षेत्र के मलसई गांव ले आया। इस दौरान रवि को फोन पर बच्ची के घायल होने की जानकारी दी। गांव मलसई में ही रवि का जनसेवा केंद्र है। इसके चलते बस तक पहुंचने में उन्हें समय न लगा। चालक बस छोड़कर भाग गया था, जिसे ग्रामीणों ने दबोच लिया था। इसके व स्कूल प्रबंधक अरविंद यादव के खिलाफ रवि ने गैर इरादतन हत्या का अभियोग पंजीकृत कराया था। कुछ दिन बाद ही दोनों को पुलिस ने जेल भेज दिया। विवेचना में प्रबंधक की पत्नी रीना व प्रधानाचार्य का नाम मुकदमे में जोड़ा गया। प्रधानाचार्य शुक्रवार को स्कूल जा रहे थे। रास्ते में गांव नौगवां के पास गिरफ्तार कर लिया गया।

निजी स्कूलों की मनमानी पर डीएम सख्त

● मनमानी फीस ड्रेस व किताबों की बाध्यता पर कठोर होगी कार्रवाई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रतापगढ़। जिला अधिकारी अभिषेक पांडेय की अध्यक्षता मे कलेक्ट्रेट सभागार मे जिला शुल्क नियामक समिति की बैठक मे स्वपोषित स्कूलों व निजी स्कूलों मे मनमानी फीस वृद्धि और किताबों ड्रेस व अन्य सामाग्री की अनिवार्यता आदि पर जिला विद्यालय निरीक्षक ओंकार राणा को निर्देशित किया कि निजी स्कूलों की फीस वृद्धि से संबंधित जानकारी समिति के समक्ष प्रस्तुत की जाए। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि यदि कोई विद्यालय अभिभावकों पर निर्धारित शुल्क से अधिक फीस वसूलता है अथवा किसी विशेष दुकान या स्वयं के स्कूल से किताबें ड्रेस जूते मोजे खरीदने का दबाव बनाता है तो उसके विरुद्ध तत्काल नोटिस जारी कर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।डीएम ने सख्त लहजे मे कहा कि निजी स्कूलों को नए शैक्षणिक सत्र में प्रवेश प्रक्रिया शुरू होने से 60 दिन पहले वेबसाइट व विद्यालय के सूचना पट पर शुल्क विवरण सार्वजनिक करना अनिवार्य होगा,वहीं वर्तमान सत्र में यह प्रक्रिया 30 दिनों मे पूरी करें।डीएम ने यह भी आदेश दिया है कि कोई भी निजी स्कूल पांच साल के पहले ड्रेस व किताबों में परिवर्तन नहीं करेगा।जून माह के पहले सप्ताह मे सभी स्कूलों के प्रबंधकों की बैठक बुलाई जाए। डीएम ने यह भी आदेश दिया है कि यदि किसी छात्र,अभिभावक, शिक्षक संगठन की ओर से अधिक शुल्क वसूली आदि की शिकायत पर समिति जांच करेगी, दोषी पाने पर प्रथम बार अधिक शुल्क वसूली गई कि वापसी के साथ लाख का जुर्माना और दूसरी बार मे पांच लाख तक का जुर्माना और तीसरी बार में मान्यता रद्द कर दिया जाएगा। डीएम ने निजी स्कूलों को चेतावनी देते हुए आदेशित किया कि शुल्क विनियमन अधिनियम के निर्देशों का अक्षरशः पालन सुनिश्चित करें।हालांकि बैठक में निजी स्कूलों की मनमानी की समीक्षा हुई,लेकिन जनपद मे प्रत्येक गली कूचों मे फर्जी गैर मान्यता प्राप्त स्कूलों के सम्बन्ध मे कोई चर्चा नहीं हुई।बैठक मे डीआईओएस ओंकार राणा बीएसए भूपेन्द्र सिंह आदि उपस्थित रहे।

बादलों और आंधी ने दी थोड़ी राहत, नौतपा होने जा रहा है शुरू; अब आगरा में गर्मी रात-दिन नहीं लेने देगी चैन

आगरा। एक सप्ताह से भीषण गर्मी का सितम झेल रहे शहरवासियों को शनिवार को बादल छाने और आंधी आने से कुछ राहत मिली। अधिकतम तापमान में गिरावट आई। मौसम विज्ञान विभाग ने रविवार को गरज के साथ बौछार पड़ने और तापमान में वृद्धि का पूर्वानुमान जताया है। सोमवार से नौतपा की शुरुआत होगी, जिसमें शहरवासियों को सूरज की तीव्र किरणें झेलनी पड़ सकती हैं। उधर, प्रदेश के गर्म शहरों में शनिवार को आगरा 11वें स्थान पर रहा। शहर में शनिवार को सुबह से धूप निकली। दिन चढ़ने के साथ तापमान भी बढ़ता चला गया। सुबह 11 बजे के बाद हल्के बादल छाने से सूरज की किरणों की तपिश कम रही। दोपहर दो बजे के करीब बादल छा गए और सूरज उनकी ओट में छिप गया। शहर में 60 किमी प्रति घटा से अधिक की रफ्तार से आंधी आई। आंधी आने से जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। शहर में धूल के गुबार छा गए, जिससे राहगीरों को परेशानी का सामना करना पड़ा। इससे अधिकतम तापमान में गिरावट आई, जिससे गर्मी का असर कम हुआ। अधिकतम तापमान 43.8 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 28.3 डिग्री सेल्सियस रहा।

पेट्रोल पंपों पर उमड़ा भारी भीड़, कहीं मारपीट तो कहीं लगा घंटों जाम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

रतनपुर/महराजगंज। नौतनवा क्षेत्र के पेट्रोल पंपों पर डीजल पाने के लिए मची अफरातफरी और हाहाकार थमने का नाम नहीं ले रहा है। शनिवार को नौतनवा ब्लॉक क्षेत्र के ग्राम पंचायत सेखुआनी स्थित इंडियन ऑयल और परसा सुमाली स्थित इंडियन ऑयल पेट्रोल पंप पर जैसे ही डीजल का वितरण शुरू हुआ वैसे ही हजारों की संख्या में लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। खेती-किसानी के सीजन में डीजल की किल्लत से परेशान किसान और वाहन चालक अपने-अपने ट्रैक्टर, गाड़ियां और हाथों में बड़े-बड़े गैलन लेकर सुबह से ही कतारों में खड़े हो गए। देखते ही देखते दोनों ही पेट्रोल पंपों पर भारी अव्यवस्था और अफरातफरी का माहौल उत्पन्न हो गया।

डीजल लेने की इस अंधी होड़ और अव्यवस्था का नतीजा यह हुआ कि परसा सुमाली स्थित पेट्रोल पंप पर कतार में आगे निकलने की बात को लेकर आपस में तीखी बहस शुरू हो गई। देखते ही देखते विवाद इतना बढ़ गया कि लोगों के बीच आपस में लात-घूंसे और मारपीट शुरू हो गई, जिससे पंप परिसर में अफरातफरी जैसी स्थिति बन गई। वहीं दूसरी ओर सेखुआनी स्थित इंडियन ऑयल पंप पर स्थिति और भी भयावह हो गई। पंप पर उमड़ी ट्रैक्टरों और अन्य वाहनों की लंबी कतारों के कारण मुख्य मार्ग पर जाम की स्थिति उत्पन्न हो गई। जाम की वजह से राहगीरों, स्कूली वाहनों समेत अन्य वाहनों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। सड़क के दोनों ओर वाहनों की लंबी लाइनें लग गईं।

की गंभीरता को देखते हुए स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस बल के कड़ी मशक्कत और सूझबूझ के बाद जाम को खुलवाया और भीड़ को तितर-बितर कर स्थिति को नियंत्रण में लिया। इस पूरे घटनाक्रम ने प्रशासन के दावों और आपूर्ति व्यवस्था की पोल खोलकर रख दी है। क्षेत्र में लगातार बन रहे ऐसे तनावपूर्ण हालातों को देखकर अब आम जनता के बीच रोष पनप रहा है।

क्षेत्रीय निवासी राजकिशोर सिंह, धीरज अग्रहरी, संतराज प्रसाद, राजू भारती, संजय तिवारी, धीरू सिंह, विजय कुमार चौधरी, राकेश अग्रहरी, मोल्हू गुप्ता, राजेन्द्र, गुलाम नबी, मोहम्मद शमी, राहुल अग्रहरी, सोनू समेत अन्य लोगों का कहना है कि सुबह दस बजे से लाईन में खड़े हैं लेकिन चार घंटे के इंतजार के बाद भी अभी मशीन के नोजल तक नहीं पहुंच पाए। ऐसे में अगर आपूर्ति पर्याप्त है तो सप्लाई होने वाला डीजल-पेट्रोल जा कहां रहा है, यदि आपूर्ति सामान्य है तो पेट्रोल पंपों पर यह किल्लत और ब्लैक में बिकने की अफवाहें क्यों गर्म हैं। किसानों का कहना है कि समय पर डीजल न मिलने से उनकी खेती का काम ठप पड़ा है, जबकि जिम्मेदार अधिकारी इस संकट पर मौन साधे हुए हैं। लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि इस कृत्रिम किल्लत और जमाखोरी की जांच कर डीजल-पेट्रोल की आपूर्ति सामान्य करवाई जाए ताकि समय से खेती-बाड़ी का कार्य सम्पन्न हो सके।

कॉकरोच जनता पार्टी और युवाओं का आभासी विद्रोह

भारत में राजनीति हमेशा केवल चुनाव, दलों और भाषणों तक सीमित नहीं रही। समय बदलने के साथ राजनीति की भाषा, उसके प्रतीक और विरोध के तरीके भी बदलते रहे हैं। कभी सड़कों पर नारे लगाकर विरोध दर्ज कराया जाता था, कभी कविताओं और व्यंग्य के माध्यम से व्यवस्था पर चोट की जाती थी और अब इंटरनेट तथा सोशल मीडिया के दौर में मीम, छोटे वीडियो और व्यंग्यात्मक अभियानों ने नई राजनीतिक अभिव्यक्ति का रूप ले लिया है। हाल के दिनों में "कॉकरोच जनता पार्टी" नाम ने इसी नई राजनीति और डिजिटल असंतोष को सामने ला दिया है। पहली बार यह नाम सुनने वाला व्यक्ति इसे मजाक समझ सकता है, लेकिन जब इसके पीछे की परिस्थितियों, इसके प्रसार और इसके सामाजिक प्रभाव को देखा जाता है तो यह स्पष्ट होता है कि यह केवल मनोरंजन नहीं बल्कि एक बड़े मानसिक और सामाजिक असंतोष का प्रतीक बन चुका है।

सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि कॉकरोच जनता पार्टी अभी तक भारत निर्वाचन आयोग में पंजीकृत कोई औपचारिक राजनीतिक दल नहीं है। इसका कोई आधिकारिक चुनाव चिन्ह, राष्ट्रीय कार्यालय या स्थापित संगठनात्मक ढांचा सामने नहीं आया है। यह मूल रूप से सोशल मीडिया पर शुरू हुआ एक व्यंग्यात्मक अभियान है, जिसने बहुत कम समय में व्यापक लोकप्रियता प्राप्त कर ली। इंटरनेट पर सक्रिय युवाओं ने इसे एक प्रतीक के रूप में अपनाया और देखते ही देखते यह नाम लाखों लोगों के बीच चर्चा का विषय बन गया। कई सोशल मीडिया मंचों पर इसके नाम से पेज, पोस्टर, नकली घोषणापत्र और व्यंग्यात्मक संदेश फैलने लगे। कुछ ही दिनों में इसके वीडियो और चित्र इतने अधिक साझा किए गए कि मुख्यधारा के समाचार माध्यमों को भी इस पर चर्चा करनी पड़ी।

इस पूरे अभियान की पृष्ठभूमि में युवाओं की नाराजगी और सामाजिक निराशा दिखाई देती है। पिछले कुछ वर्षों में देश में बेरोजगारी, प्रतियोगी परीक्षाओं में गड़बड़ियां, नियुक्तियों में देरी, महंगाई और आर्थिक दबाव जैसे मुद्दों ने युवाओं के भीतर गहरी बेचैनी पैदा की है। लाखों छात्र वर्षों तक परीक्षाओं की तैयारी करते हैं, लेकिन कई बार परीक्षाएं रद्द हो जाती हैं, परिणामों में देरी होती है या भर्ती प्रक्रिया लंबे समय तक अटक जाती है। इससे युवाओं के भीतर यह भावना बढ़ी है कि उनकी मेहनत और संघर्ष को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा। इसी वातावरण में जब सार्वजनिक चर्चाओं में बेरोजगार युवाओं के लिए अपमानजनक शब्दों के उपयोग की चर्चा हुई, तब सोशल मीडिया पर तीखी प्रतिक्रिया देखने को मिली। लोगों ने उसी अपमानजनक शब्द को व्यंग्य और प्रतिरोध के प्रतीक में बदल दिया। 'कॉकरोच' शब्द इसी प्रक्रिया में विरोध का माध्यम बन गया।

कॉकरोच को सामान्यतः ऐसा जीव माना जाता है जिसे लोग गंदगी, उपेक्षा और असुविधा से जोड़ते हैं। उसे बार बार खत्म करने की कोशिश की जाती है, लेकिन वह फिर भी जीवित रह जाता है। इस प्रतीक को आंदोलन से जोड़कर यह संदेश दिया गया कि व्यवस्था चाहे जितनी उपेक्षा करे, आम नागरिक और युवा पूरी तरह समाप्त नहीं होते। वे हर बार नए रूप में सामने आते हैं और अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। यही कारण है कि इस नाम ने इंटरनेट पर गहरी प्रतीकात्मक शक्ति हासिल कर ली।

सोशल मीडिया ने इस अभियान को फैलाने में सबसे बड़ी भूमिका निभाई। आज इंटरनेट केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रह गया है। यह जनमत निर्माण, राजनीतिक प्रचार और सामाजिक बहस का बड़ा मंच बन चुका है। पहले जहां किसी आंदोलन को फैलाने में महीनों लग जाते थे, वहीं अब कुछ घंटों में कोई विषय राष्ट्रीय चर्चा बन सकता है। कॉकरोच जनता पार्टी के साथ भी यही हुआ। हजारों युवाओं ने व्यंग्यात्मक चित्र, काल्पनिक घोषणापत्र और मजाकिया वीडियो बनाकर साझा किए। कई पोस्टों में बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार और राजनीतिक वादों पर तीखा व्यंग्य किया गया। कुछ लोगों ने इसे 'डिजिटल विद्रोह' कहा तो कुछ ने इसे व्यवस्था से निराश युवाओं की सामूहिक अभिव्यक्ति बताया।

इस अभियान की लोकप्रियता का एक कारण यह भी है कि आज का युवा पारंपरिक राजनीतिक भाषा से जल्दी प्रभावित नहीं होता। लंबे भाषण और जटिल राजनीतिक चर्चाएं उसकी रुचि को उतना आकर्षित नहीं करतीं जितना कि संक्षिप्त, व्यंग्यात्मक और सीधे संदेश करते हैं। मीम संस्कृति ने इसी मानसिकता को मजबूत किया है। एक छोटा चित्र, दो पंक्तियों का व्यंग्य या कुछ सेकंड का वीडियो कई बार लंबी राजनीतिक बहस से अधिक प्रभाव डाल देता है। कॉकरोच जनता पार्टी ने इसी डिजिटल संस्कृति का इस्तेमाल किया। इसकी सामग्री में हास्य भी था, गुस्सा भी था और व्यवस्था पर कटाक्ष भी। यही मिश्रण इसे तेजी से लोकप्रिय बनाता गया। हालांकि इस अभियान को लेकर मतभेद भी कम नहीं हैं। कुछ लोग इसे युवाओं की वास्तविक समस्याओं की अभिव्यक्ति मानते हैं, जबकि कुछ इसे केवल इंटरनेट का क्षणिक मनोरंजन बताते हैं। आलोचकों का कहना है कि ऐसे अभियान गंभीर मुद्दों को हल्का बना देते हैं। उनके अनुसार बेरोजगारी और आर्थिक संकट जैसे विषयों पर ठोस राजनीतिक संवाद की आवश्यकता है, न कि केवल मीम और व्यंग्य की। दूसरी ओर समर्थकों का तर्क है कि जब पारंपरिक माध्यम युवाओं की आवाज को पर्याप्त महत्व नहीं देते, तब सोशल मीडिया ही उनके लिए सबसे प्रभावी मंच बन जाता है। वे मानते हैं कि हास्य और व्यंग्य भी लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति का हिस्सा हैं और इनके माध्यम से व्यवस्था पर सवाल उठाना पूरी तरह वैध है।

इस पूरे घटनाक्रम का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यह राजनीति के बदलते स्वरूप को सामने लाता है। पहले राजनीति मुख्यतः रैलियों, पोस्टरों और समाचार चैनलों तक सीमित रहती थी। अब इंटरनेट पर चलने वाले अभियान भी जनमत को प्रभावित करने लगे हैं। किसी हैशटैग, मीम या व्यंग्यात्मक वीडियो का प्रभाव कई बार बड़े राजनीतिक भाषणों के बराबर दिखाई देता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि नई पीढ़ी अपनी बात रखने के लिए नए माध्यम और नई भाषा का इस्तेमाल कर रही है। वह सीधे टकराव की जगह व्यंग्य और प्रतीकों का सहारा लेती है। कॉकरोच जनता पार्टी इसी परिवर्तन का उदाहरण है। इस अभियान के दौरान कई अन्य व्यंग्यात्मक नाम और समूह भी सामने आए। कुछ लोगों ने इसके समर्थन में काल्पनिक घोषणापत्र जारी किए, तो कुछ ने विरोध में नए व्यंग्यात्मक संगठन बना दिए। इससे यह भी स्पष्ट हुआ कि इंटरनेट की राजनीति केवल एक दिशा में नहीं चलती। वहां समर्थन और विरोध दोनों समान तेजी से फैलते हैं। किसी भी विषय पर हजारों लोग अपना अलग अलग दृष्टिकोण लेकर सामने आ जाते हैं। यही कारण है कि कॉकरोच जनता पार्टी केवल एक समूह का अभियान नहीं रह गई, बल्कि यह इंटरनेट पर चल रही व्यापक राजनीतिक व्यंग्य संस्कृति का हिस्सा बन गई। कई विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह के अभियान लोकतंत्र के भीतर बढ़ती सामाजिक दूरी का संकेत भी हैं। जब बड़ी संख्या में युवा यह महसूस करने लगते हैं कि उनकी समस्याओं को गंभीरता से नहीं सुना जा रहा, तब वे वैकल्पिक अभिव्यक्ति के रास्ते तलाशते हैं। कभी यह रास्ता सड़कों पर आंदोलन के रूप में दिखाई देता है और कभी सोशल मीडिया पर व्यंग्य के रूप में। कॉकरोच जनता पार्टी को इसी संदर्भ में समझना चाहिए। यह संभव है कि कुछ समय बाद यह नाम इंटरनेट से गायब हो जाए, लेकिन जिस मानसिक स्थिति ने इसे जन्म दिया है, वह इतनी जल्दी समाप्त होने वाली नहीं दिखती।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि सोशल मीडिया पर लोकप्रिय होना और वास्तविक राजनीतिक शक्ति हासिल करना दो अलग बातें हैं। इंटरनेट पर लाखों लोगों द्वारा किसी विषय को साझा करना यह साबित नहीं करता कि वह वास्तविक राजनीतिक संगठन बन चुका है। अभी तक कॉकरोच जनता पार्टी का कोई स्पष्ट राजनीतिक कार्यक्रम, नेतृत्व संरचना या चुनावी योजना सामने नहीं आई है। इसलिए इसे फिलहाल एक प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक डिजिटल आंदोलन के रूप में ही देखा जाना चाहिए। फिर भी इसका प्रभाव इस बात में दिखाई देता है कि इसने राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा पैदा की और युवाओं की समस्याओं को नए तरीके से सामने ला दिया। इस पूरे प्रकरण ने भारतीय समाज के सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न भी खड़ा किया है। क्या नई पीढ़ी पारंपरिक राजनीति से निराश होकर व्यंग्य और मीम को अपनी नई राजनीतिक भाषा बना रही है? यदि इसका उत्तर हां है, तो यह केवल इंटरनेट का मनोरंजन नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का संकेत है। आने वाले समय में संभव है कि राजनीतिक दलों को भी युवाओं तक पहुंचने के लिए इसी नई डिजिटल भाषा को समझना पड़े। केवल भाषण और घोषणाएं अब पर्याप्त नहीं रह गई हैं। लोगों की भावनाएं, उनका गुस्सा और उनकी निराशा अब मीम और व्यंग्य के माध्यम से भी सामने आ रही हैं।

कॉकरोच जनता पार्टी की वास्तविकता यही है कि यह फिलहाल कोई औपचारिक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि एक सामाजिक और डिजिटल प्रतिक्रिया है। इसके भीतर गुस्सा भी है, हास्य भी है और व्यवस्था से असंतोष भी। यह आंदोलन चाहे अस्थायी साबित हो या भविष्य में किसी बड़े रूप में विकसित हो, लेकिन इसने यह स्पष्ट कर दिया है कि इंटरनेट का दौर केवल मनोरंजन का दौर नहीं है। यह वह समय है जब व्यंग्य भी राजनीतिक शक्ति बन सकता है और एक मीम भी राष्ट्रीय बहस को जन्म दे सकता है।

महेन्द्र तिवारी

भारतीय समाज को जकड़े हुए है दहेज की जड़ें..

संपादक/लेखकः राजीव शुक्ला

[एक प्राचीन बीमारी जो आधुनिक भारत को खोखला कर रही है]

भारत में हर साल हजारों युवतियाँ दहेज की आग में जलकर राख हो जाती हैं। चाहे ट्वीशा शर्मा का मामला हो या देश के किसी कोने में रोज़ होने वाली अनगिनत रसोई में आग लगने या छत से गिरने की घटनाएँ – दहेज की समस्या एक व्यक्तिगत अपराध नहीं, बल्कि भारतीय समाज की गहरी जड़ों में बसी एक सामाजिक महामारी है। दहेज की प्रथा वैदिक काल से चली आ रही है, लेकिन उस समय यह कन्यादान और स्त्रीधन के रूप में लड़की को सुरक्षा देने का प्रतीक था। कालांतर में यह पितृसत्तात्मक समाज की सबसे बड़ी विडंबना बन गई। मुगल काल, ब्रिटिश काल और आजादी के बाद भी यह प्रथा न केवल बनी रही, बल्कि और मजबूत होती गई। आज यह समस्या सिर्फ ग्रामीण क्षेत्रों या अशिक्षित वर्ग तक सीमित नहीं है। शहरों के पढ़े-लिखे, उच्च मध्यम वर्ग और यहाँ तक कि एन आर आई परिवारों में भी यह प्रथा नए रूप ले चुकी है जैसे कार, फ्लैट, विदेश यात्रा, बिजनेस में निवेश और महंगे गिफ्ट्स व शादी का खर्च।

यह जकड़ क्यों नहीं छूट रही है, इसके कई कारण हैं। पितृसत्तात्मक मानसिकता में बेटे को कुल का वारिस माना जाता है, जबकि बेटी को पराए घर की संपत्ति। इसलिए बेटे की शादी में लाभ की अपेक्षा की जाती है। सामाजिक प्रतिष्ठा का बोझ भी कम नहीं है। शादी आजकल रिश्ता नहीं, सोशल स्टेटस का प्रदर्शन बन गई है। समाज लड़के वाले परिवार को माँगने का अधिकार देता है और लड़की वाले को देने का दबाव। आर्थिक असमानता भी इसमें बड़ा योगदान दे रही है। बेटे के माता-पिता सोचते हैं कि उन्होंने बेटे को पढ़ाया-लिखाया है, इसलिए अब रिटर्न चाहिए। लड़की के माता-पिता जीवन भर की कमाई और कर्ज लेकर इस सौदे को पूरा करते हैं। कानून का कमजोर क्रियान्वयन भी समस्या को बढ़ावा दे रहा है। दहेज निषेध अधिनियम 1961 के बावजूद पुलिस, अदालतें और समाज अक्सर परिवार की इज्जत के नाम पर मामलों को दबाने या समझौता कराने में लगे रहते हैं।

इसका असर समाज पर गहरा पड़ रहा है। युवतियों में आत्महत्या की दर लगातार ऊँची है। लड़कियों की शिक्षा और करियर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है क्योंकि शादी का खर्च बचाना पड़ता है। बेटी जन्म पर परिवार में उदासी का माहौल बन जाता है और नए जोड़ों में शुरू से ही तनाव और अविश्वास घर कर लेता है। सबसे खतरनाक पहलू यह है कि यह प्रथा अब अंतरपीढ़ी हो गई है। माताएँ, जो खुद दहेज का शिकार रही हैं, बहुओं से वही अपेक्षा रखती हैं। इस तरह यह जहर पीढ़ी दर पीढ़ी फैलता जा रहा है। दहेज की जड़ें इतनी गहरी हैं कि केवल कानून से नहीं कटेंगी। इसके लिए सामाजिक बहिष्कार जरूरी है ताकि दहेज लेने वाले परिवारों को सामाजिक रूप से अलग-थलग किया जा सके। शादी की सादगी अभियान चलाना चाहिए जिसमें सरकार, सिनेमा, सोशल मीडिया और धर्मगुरु मिलकर सिंपल मैरिज को प्रतिष्ठित करें। लड़कियों की आर्थिक स्वतंत्रता पर जोर देना होगा ताकि हर लड़की कम से कम 25 वर्ष की उम्र तक आर्थिक रूप से स्वावलंबी बने। शिक्षा में सुधार के तहत स्कूलों में पितृसत्ता, जेंडर समानता और दहेज के दुष्परिणामों पर अनिवार्य पाठ्यक्रम शामिल करना चाहिए। नई पीढ़ी को इस प्रथा को खारिज करने का साहस दिखाना होगा। दहेज भारतीय समाज की वह जकड़ है जो हमारी प्रगति को पीछे खींच रही है। जब तक हम बेटी को बोझ समझते रहेंगे और बेटे को संपत्ति, तब तक यह समस्या बनी रहेगी। समय आ गया है कि हम इस प्रथा को सिर्फ कानूनी अपराध नहीं, बल्कि सामाजिक पाप घोषित करें। जब तक दहेज की जड़ें समाज से नहीं उखड़ेंगी, भारत विकसित राष्ट्र बनने का सपना अधूरा ही रहेगा। दहेज मुक्त भारत सिर्फ नारा नहीं, एक जरूरी क्रांति होनी चाहिए।

सुरक्षा व्यवस्था के लिए चुनौती बन रही केदारनाथ यात्रियों की बढ़ती भीड़

भीषण गर्मी और स्कूली बच्चों की छुट्टियों के इस दौर में देशभर के मैदानी इलाकों के लोग ठंडक, प्राकृतिक सौंदर्य और बर्फ का आनंद लेने के लिए कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड की ओर रुख कर रहे हैं। इन दिनों तीनों पर्वतीय राज्यों में पर्यटकों और श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी है। राष्ट्रीय राजमार्गों पर वाहनों की लंबी कतारें और घंटों तक लगने वाले जाम की तस्वीरें देशभर में चर्चा का विषय बनी हुई हैं। विशेष रूप से देवभूमि उत्तराखंड की स्थिति हिमाचल और जम्मू-कश्मीर से भी अधिक चिंताजनक दिखाई दे रही है। गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम के दर्शन के लिए प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु उत्तराखंड पहुंचते हैं। इस वर्ष श्रद्धालुओं की संख्या ने अब तक के कई रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। वर्तमान में बीस लाख से अधिक श्रद्धालु चारधाम यात्रा पर हैं। इनमें सबसे कठिन और दुर्गम यात्रा केदारनाथ धाम की मानी जाती है। हालात यह हैं कि लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ को पंजीकरण और टोकन व्यवस्था के बावजूद नियंत्रित करने में प्रशासन और सुरक्षा एजेंसियों को भारी मशक्कत करनी पड़ रही है। गौरीकुंड से केदारनाथ धाम तक लगभग 16 किलोमीटर की यात्रा पैदल, घोड़े और पालकी के माध्यम से पूरी की जाती है। धाम के कपाट केवल छह माह के लिए खुलते हैं, इसलिए प्रतिदिन हजारो लाखो श्रद्धालु गौरीकुंड में अपने नंबर की प्रतीक्षा करते दिखाई देते हैं। स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि महंगे ऑनलाइन टिकट और विशेष व्यवस्थाओं के बावजूद श्रद्धालुओं को घोड़े और पालकी तक आसानी से उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं। पैदल यात्रियों की बढ़ती संख्या के कारण पूरी यात्रा मार्ग पर दिन रात भीड़ बनी हुई है। यात्रा व्यवस्था में लगे सुरक्षाकर्मियों और प्रशासनिक अमले के लिए श्रद्धालुओं को सुरक्षित दर्शन करवाना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं है। केदारनाथ धाम में होटल संचालकों और स्थानीय व्यापारियों के लिए भी ऊंचाई वाले क्षेत्र में भारी भीड़ के बीच खानपान और आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था करना कठिन होता जा रहा है। हरिद्वार से लेकर चारधाम यात्रा मार्ग तक जगह-जगह जाम की स्थिति बनी हुई है। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि अव्यवस्था और प्रतीक्षा से परेशान कुछ श्रद्धालु ड्यूटी पर तैनात जवानों और कर्मचारियों से विवाद भी कर बैठते हैं, जो धार्मिक यात्रा की गरिमा के विपरीत है। चारधाम यात्रा, विशेषकर केदारनाथ और बद्रीनाथ जाने वाले श्रद्धालुओं से विनम्र निवेदन है कि वे यात्रा पर निकलते समय वापसी का टिकट जल्दबाजी में निर्धारित तिथि का लेकर न आएं। यदि टिकट कराना आवश्यक हो तो कम से कम एक सप्ताह का अंतर अवश्य रखें, ताकि भारी भीड़ के बावजूद यात्रा सुगमता और शांति से पूरी की जा सके। यह यात्रा केवल पर्यटन नहीं, बल्कि आस्था, श्रद्धा और आत्मिक शांति का मार्ग है। इसे मौज मस्ती और दिखावे की यात्रा बनाने से बचना चाहिए। देवभूमि उत्तराखंड के चारों धाम सदियों से आस्था और आध्यात्मिक चेतना के प्रतीक रहे हैं। श्रद्धालुओं को चाहिए कि वे पवित्र भाव, संयम और अनुशासन के साथ यात्रा करें तथा ईश्वर के साक्षात अनुभव का प्रयास करें। वर्ष 2013 की भीषण केदारनाथ त्रासदी आज भी देश के मानस में ताजा है। प्रकृति और धार्मिक स्थलों के प्रति लापरवाही कितनी भयावह हो सकती है, इसका दर्दनाक उदाहरण पूरी दुनिया देख चुकी है। अतः देवभूमि उत्तराखंड की यात्रा पर जाने वाले सभी श्रद्धालुओं से आग्रह है कि वे अपने मन, कर्म और वचन से देवों के देव महादेव का स्मरण करें और उनके होने का एहसास करे। श्रद्धा, धैर्य, अनुशासन और प्रकृति के सम्मान के साथ की गई यात्रा ही वास्तव में पुण्यदायी और जीवन को आनंदमय बनाने वाली होती है। अरविंद रावल

मन में यह प्रश्न आ सकता हैं कि क्या जीवन में अनुशासन आवश्यक है

आत्मानुशासन > हमारे मन में यह प्रश्न आ सकता हैं कि क्या जीवन में अनुशासन आवश्यक है? तो इसके उत्तर में कहा जा सकता हैं कि हां, जीवन में अनुशासन बहुत ज़रूरी है। अनुशासन से ही व्यक्ति सफलता पा सकता है। अनुशासन दो शब्दों- अनु+ शासन से मिलकर बना है। अनु का अर्थ पालन है और शासन का अर्थ नियमो का पालन करना होता है। हम अपनी आत्मा का संयम करें क्योंकि आत्मा का संयम करना बहुत मुश्किल काम होता हैं। दमितात्मा ही इहलोक और परलोक में सुखी होता हैं। वह जिसमें संतोष, सकरात्मक सोच और आत्मानंद के साथ आत्मानुशासन से भरा अध्यात्म रुपी खजाना होता है। उसको सब कुछ हासिल होता है। अनुशासन हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है, यह हमें नियमों का पालन करना सिखाता है। आत्मनियन्त्रण, संयम, आत्मानुशासन इसके पर्याय हैं। हम मनुष्य सामाजिक प्राणी है, जो हम समाज में रहते है, और हमको इसमें रहने के लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है।

> आत्मानुशासन बहुत महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। शास्त्र में कहा गया है कि श्रेष्ठ वही है, जो आदमी स्वयं अपनी आत्मा पर अनुशासन कर ले। संयम और तप आदि के द्वारा स्वयं पर शासन करने का प्रयास हमको करना चाहिए। प्रश्न हो सकता है कि आत्मा पर अनुशासन कैसे हो? आत्मा अमूर्त है तो उस पर अनुशासन अथवा अपने पर अनुशासन कैसे हो सकता है? उत्तर देते हुए बताया गया कि आदमी पहले स्वयं की वाणी पर नियंत्रण करे। आदमी के पास बोलने की शक्ति होती है तो वह अच्छा और बुरा भी बोल सकता है। आदमी को अपनी जुबान पर लगाम लगाने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को झूठ, कटु व बेमतलब आदि बोलने से बचने का प्रयास होना चाहिए। इसके द्वारा आदमी अपनी वाणी को साध सकता है। अनुशासन से हमारे जीवन में सही से स्थिरता, सफलता और आत्मविश्वास आदि का विकास होता है। अनुशासन राष्ट्र की उन्नति का मूल आधार है। अनुशासन हमारे द्वारा सुधारात्मक होना चाहिए न कि दंडात्मक। अनुशासन में रहने वाले को हम अनुशासित कहते हैं। अनुशासन काम (कार्य) को योजनाबद्ध तरीके से करने में मदद करता है।

> वचन पर अनुशासन है तो आत्मा पर अनुशासन का एक अंग आदमी को प्राप्त हो जाता है। आदमी को अपने शरीर को भी साधने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को कुछ देर अपने शरीर को स्थिर रखने की साधना हो। आदमी अपने शरीर से किसी दूसरे को कष्ट देने से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसी जानवर को भी बिना मतलब तकलीफ देने से बचने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को मन पर अनुशासन करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी अपने मन में अच्छे मंत्र के जप का प्रयास करे। आदमी सबके कल्याण व भले के विषय में सोच रखे। सभी प्राणी सुखी हों, सभी आत्मिक सुखों को प्राप्त करें। किसी को कष्ट न हो। मन में एकाग्रता बढ़े। इसके लिए आचार्यश्री महाप्रज्ञजी प्रेक्षाध्यान के प्रयोग के अंतर्गत कायोत्सर्ग कराते थे। आदमी को अपनी इन्द्रियों पर अनुशासन रखने का प्रयास करना चाहिए। आदमी बुरा सुने नहीं, बुरा देखे नहीं, बुरा बोले नहीं और बुरा किसी का करे नहीं। आदमी आर्ष और आगमवाणी को सुनने का प्रयास करे। इस प्रकार वचोनुशासन, कायानुशासन, मनोनुशासन और इन्द्रियानुशासन को साध लेने से आदमी आत्मानुशासन कर सकता है। चार अवयवों वाला आत्मानुशासन होता है। आदमी अपने पर अपना अनुशासन रखे, यह मानव जीवन की अच्छी निष्पत्ति हो सकती है। इस प्रकार आदमी को संयम और तप आदि के द्वारा अपनी आत्मा को साधने का प्रयास करना चाहिए। अनुशासन एक ऐसा गुण है जिसकी हम मनुष्य को जीवन के हर क्षेत्र में जरूरत पड़ती है- घर-परिवार में अनुशासन का विशेष महत्व है। खिलाड़ियों और विद्यार्थियों के जीवन में अनुशासन का विशेष महत्व है। इसके बिना सफलता मिलना संदेहास्पद रहती है। अनुशासन से व्यक्ति विकर्षणों से बच पाता है। अनुशासन से व्यक्ति अपने व्यवहार में बदलाव ला सकता है और अपनों का चहेता बन सकता है। अनुशासन-लक्ष्य और उपलब्धि के बीच का पुल है, इसलिए यह सफलता की कुंजी है। निज पर शासन, फिर अनुशासन को धारण करने वाला कुशल अनुशास्ता होता है। तेरापंथ धर्मसंघ में वर्तमान अनुशास्ता इसके आदर्श हैं। उन्होंने कहा- अनुशासन करना बड़ी बात नहीं है, महत्वपूर्ण है, अनुशासन के प्रति निष्ठा पैदा करना। वह जो आत्मानुशासन की चेतना को जागृत करे, वह अनुशासन सार्थक होता है। जहां आज्ञा, मर्यादा, व्यवस्था के प्रति दृढ़ निष्ठा आदि होती है, वहीं अनुशासन फलता-फूलता और चलता है। आत्मानुशासन से आत्मगुणो में विराम नहीं लगता हैं। वह इससे हमारे समता और सहिष्णुता का विकास होता है। विनय का बहुमूल्य वरदान है तभी तो अहंकार का विनाश हो जाता हैं। वह जहां संयम रहता हैं वहां शान्ति से प्रगतिशीलता की राह आगे बढ़ने की बनती हैं। अपनी आत्मा पर अनुशासन का कठिन काम जो करता हैं। वह व्यक्ति सुखी बनता हैं। वह इसलोक में भी सुखी होता हैं और अगले जीवन में भी सुखी बनता हैं। इसलिए हमको सदैव सही से आत्मानुशासन का प्रयास करना चाहिए। यही हमारे लिए काम्य हैं।

> प्रदीप छाजेड़

हरित ऊर्जा की असली ताकत बनेगा मजबूत सुपर ग्रिड,भारत को भविष्य की ऊर्जा जरूरतों के लिए चाहिए नई ट्रांसमिशन क्रांति

भारत तेजी से बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था के बीच ऊर्जा क्षेत्र में एक बड़े परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। देश की बढ़ती आबादी औद्योगिक विस्तार शहरीकरण और डिजिटल तकनीकों के बढ़ते उपयोग ने बिजली की मांग को अभूतपूर्व स्तर तक पहुंचा दिया है। दूसरी ओर पर्यावरण संरक्षण और कार्बन उत्सर्जन कम करने की वैश्विक प्रतिबद्धताओं के कारण भारत तेजी से हरित ऊर्जा की ओर बढ़ रहा है। सौर ऊर्जा पवन ऊर्जा ग्रीन हाइड्रोजन और बैटरी स्टोरेज जैसे क्षेत्रों में भारी निवेश हो रहा है। भारत ने वर्ष 2030 तक 500 गीगावॉट गैर जीवाश्म ऊर्जा क्षमता हासिल करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किया है। यह लक्ष्य केवल ऊर्जा उत्पादन का नहीं बल्कि ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता का भी प्रतीक है। लेकिन इस पूरी योजना के सामने सबसे बड़ी चुनौती ट्रांसमिशन नेटवर्क की बनकर उभर रही है।

देश में सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाएं तेजी से तैयार हो रही हैं लेकिन उस बिजली को जरूरत वाले क्षेत्रों तक पहुंचाने के लिए पर्याप्त ट्रांसमिशन व्यवस्था अभी विकसित नहीं हो सकी है। कई बार सौर ऊर्जा पार्कों में बिजली उत्पादन होने के बावजूद उसे ग्रिड में शामिल नहीं किया जा पाता और उत्पादन कम करना पड़ता है। यही वह स्थिति है जिसने भारत के सामने सुपर ग्रिड जैसी आधुनिक व्यवस्था की आवश्यकता को और अधिक स्पष्ट कर दिया है।

भारत में बिजली की मांग लगातार नए रिकॉर्ड बना रही है। गर्मी के मौसम में एयर कंडीशनर और कूलिंग सिस्टम का उपयोग तेजी से बढ़ा है। इसके अलावा डेटा सेंटरों की संख्या में वृद्धि मेट्रो शहरों का विस्तार और डिजिटल सेवाओं का बढ़ता उपयोग बिजली की खपत को लगातार ऊपर ले जा रहा है।

देश में इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। आने वाले वर्षों में लाखों इलेक्ट्रिक वाहन सड़क पर होंगे जिनके लिए बड़े स्तर पर चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करना होगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित डेटा सेंटर भी भारी मात्रा में बिजली की मांग पैदा कर रहे हैं। पिछले कुछ दिनों से भारत में बिजली की मांग लगातार अब तक के सबसे ऊंचे स्तर पर बनी हुई है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगले दशक में भारत दुनिया का सबसे बड़ा ऊर्जा बाजार बन सकता है। ऐसे में यदि ट्रांसमिशन नेटवर्क को समय रहते मजबूत नहीं किया गया तो ऊर्जा आपूर्ति पर गंभीर दबाव पड़ सकता है।

हरित ऊर्जा क्षेत्र में भारत तेजी से बढ़ रहा है।भारत ने पिछले दशक में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। राजस्थान गुजरात तमिलनाडु और कर्नाटक जैसे राज्यों में विशाल सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाएं स्थापित की गई हैं। देश की स्थापित सौर और पवन ऊर्जा क्षमता करीब 257 गीगावॉट तक पहुंच चुकी है। भारत दुनिया के उन देशों में शामिल हो चुका है जहां सौर ऊर्जा उत्पादन की लागत सबसे कम है। यही कारण है कि वैश्विक निवेशक भी भारतीय ग्रीन एनर्जी सेक्टर में बड़े स्तर पर निवेश कर रहे हैं। सरकार का लक्ष्य वर्ष 2030 तक गैर जीवाश्म ऊर्जा क्षमता को बढ़ाकर 500 गीगावॉट तक पहुंचाना है। इसके लिए बड़े पैमाने पर सौर पार्क पवन ऊर्जा परियोजनाएं और ग्रीन हाइड्रोजन मिशन पर काम किया जा रहा है। लेकिन उत्पादन क्षमता में वृद्धि के साथ एक गंभीर समस्या भी सामने आ रही है। कई बार बिजली उत्पादन होने के बावजूद उसे राष्ट्रीय ग्रिड तक नहीं पहुंचाया जा पाता क्योंकि ट्रांसमिशन नेटवर्क पर्याप्त नहीं होता। ट्रांसमिशन नेटवर्क की कमी सबसे बड़ी बाधा बन रही है।

भारत में सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाएं अधिकतर उन क्षेत्रों में स्थापित की जाती हैं जहां प्राकृतिक संसाधन भरपूर उपलब्ध हों। उदाहरण के तौर पर राजस्थान और गुजरात में विशाल सौर पार्क हैं जबकि तमिलनाडु और कर्नाटक पवन ऊर्जा के बड़े केंद्र हैं। दूसरी ओर बिजली की सबसे अधिक मांग दिल्ली मुंबई बेंगलुरु चेन्नई और औद्योगिक राज्यों में होती है। ऐसे में हजारों किलोमीटर दूर तक बिजली पहुंचाने के लिए अत्यधिक शक्तिशाली ट्रांसमिशन नेटवर्क की आवश्यकता होती है। भारत का वर्तमान ट्रांसमिशन ढांचा अभी मुख्य रूप से 765 केवी एसी क्षमता तक सीमित है। यह नेटवर्क तेजी से बढ़ती हरित ऊर्जा जरूरतों के लिए पर्याप्त नहीं माना जा रहा।

जब उत्पादन अधिक होता है और ट्रांसमिशन लाइनें सीमित होती हैं तब ग्रिड पर दबाव बढ़ जाता है। ऐसी स्थिति में बिजली उत्पादन को कम करना पड़ता है जिसे कर्टेलमेंट कहा जाता है। यह स्थिति न केवल तकनीकी चुनौती है बल्कि आर्थिक नुकसान भी है क्योंकि तैयार बिजली का उपयोग नहीं हो पाता। सौर बिजली कटौती गंभीर संकट बन रहा है।एनर्जी थिंक टैंक एम्बर की रिपोर्ट ने इस समस्या को बेहद गंभीर रूप में सामने रखा है। रिपोर्ट के अनुसार मई से दिसंबर 2025 के बीच भारत में लगभग 2.3 टेरावॉट घंटा सौर बिजली की कटौती हुई। अकेले अक्टूबर 2025 में लगभग 0.9 टेरावॉट घंटा सौर बिजली ग्रिड तक नहीं पहुंच सकी। यह बिजली लाखों घरों की जरूरत पूरी कर सकती थी।

मई से दिसंबर 2025 के दौरान आपात ग्रिड प्रबंधन के तहत औसत मासिक सौर उत्पादन का लगभग 18 प्रतिशत हिस्सा कटौती की चपेट में आया। दिसंबर 2025 में ट्रांसमिशन नेटवर्क की कमी के कारण लगभग 4 गीगावॉट सौर क्षमता को सीमित करना पड़ा। यह स्थिति बताती है कि यदि ट्रांसमिशन ढांचे को तेजी से मजबूत नहीं किया गया तो हरित ऊर्जा परियोजनाओं का पूरा लाभ देश को नहीं मिल पाएगा। इससे निवेशकों का भरोसा भी प्रभावित हो सकता है।

चीन ने कई वर्ष पहले ही यह समझ लिया था कि भविष्य की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए केवल बिजली उत्पादन बढ़ाना पर्याप्त नहीं होगा। इसलिए उसने ट्रांसमिशन नेटवर्क पर बड़े स्तर पर निवेश शुरू किया। चीन ने अल्ट्रा हाई वोल्टेज यानी यूएचवी आधारित सुपर ग्रिड विकसित किया है। आज उसके पास 60 हजार किलोमीटर से अधिक यूएचवी ट्रांसमिशन लाइनें हैं। इन लाइनों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे हजारों किलोमीटर दूर तक बेहद कम ऊर्जा नुकसान के साथ बिजली पहुंचा सकती हैं। चीन एक बार में 8 से 12 गीगावॉट तक बिजली ट्रांसफर करने में सक्षम है। चीन के पश्चिमी हिस्सों में स्थित विशाल सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाओं से बिजली पूर्वी औद्योगिक क्षेत्रों तक इसी सुपर ग्रिड के जरिए पहुंचाई जाती है। चीन की कुल सौर और पवन ऊर्जा क्षमता लगभग 1840 गीगावॉट तक पहुंच चुकी है और इसका कुशल उपयोग मजबूत ट्रांसमिशन नेटवर्क के कारण संभव हो पाया है।

भारत की भौगोलिक स्थिति और तेजी से बढ़ती ऊर्जा जरूरतें अब सुपर ग्रिड जैसी व्यवस्था की मांग कर रही हैं। देश के एक हिस्से में पैदा होने वाली अतिरिक्त बिजली को दूसरे हिस्से तक तुरंत पहुंचाना भविष्य की सबसे बड़ी जरूरत बनने जा रहा है। यदि भारत आधुनिक सुपर ग्रिड विकसित करता है तो सौर और पवन ऊर्जा की बर्बादी काफी हद तक रोकी जा सकती है। इससे कोयले पर निर्भरता कम होगी और कार्बन उत्सर्जन में भी बड़ी कमी आएगी। सुपर ग्रिड की मदद से बिजली आपूर्ति अधिक स्थिर और सुरक्षित बनेगी। किसी क्षेत्र में बिजली संकट होने पर दूसरे क्षेत्र से तुरंत बिजली भेजी जा सकेगी। इससे राष्ट्रीय ग्रिड की विश्वसनीयता भी बढ़ेगी। यह प्रणाली भविष्य में ग्रीन हाइड्रोजन मिशन इलेक्ट्रिक वाहन नीति और स्मार्ट सिटी परियोजनाओं के लिए भी मजबूत आधार तैयार करेगी। हाल के वर्षों में पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और वैश्विक ऊर्जा संकट ने दुनिया को यह सिखाया है कि तेल और गैस पर अत्यधिक निर्भरता जोखिम भरी हो सकती है।

भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयात करता है। यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल और गैस की कीमतें बढ़ती हैं तो इसका सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। इसी कारण अब ऊर्जा स्रोतों के विविधीकरण पर जोर दिया जा रहा है। सौर ऊर्जा पवन ऊर्जा और ग्रीन हाइड्रोजन को भविष्य का समाधान माना जा रहा है। लेकिन इन सभी योजनाओं की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि देश का ट्रांसमिशन नेटवर्क कितना मजबूत है।

भविष्य की जरूरतों के अनुसारतैयारी करनी होगी। ऊर्जा विशेषज्ञों का मानना है कि भारत को ट्रांसमिशन क्षमता के लक्ष्य को तेजी से बढ़ाना होगा। वर्तमान लक्ष्य लगभग साढ़े छह लाख सर्किट किलोमीटर का है लेकिन भविष्य की जरूरतों को देखते हुए इसे बढ़ाकर दस लाख सर्किट किलोमीटर तक ले जाने की आवश्यकता है। इसके लिए सरकार को बड़े निवेश करने होंगे। निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ानी होगी और नई तकनीकों पर अनुसंधान को प्रोत्साहन देना होगा।

यूएचवी तकनीक स्मार्ट ग्रिड बैटरी स्टोरेज और डिजिटल ग्रिड मैनेजमेंट जैसी आधुनिक प्रणालियों को तेजी से अपनाना होगा। राज्यों और केंद्र सरकार के बीच बेहतर समन्वय भी जरूरी होगा। भारत के पास अपार सौर ऊर्जा संसाधन हैं और दुनिया का सबसे बड़ा युवा बाजार भी। यदि देश मजबूत ट्रांसमिशन नेटवर्क तैयार कर लेता है तो वह आने वाले वर्षों में हरित ऊर्जा महाशक्ति बन सकता है। भविष्य की ऊर्जा क्रांति केवल सौर पैनलों और पवन चक्कियों से नहीं बल्कि उन सुपर ग्रिड लाइनों से तय होगी जो इस ऊर्जा को देश के हर घर उद्योग और गांव तक पहुंचाएंगी।

कांतिलाल मांडोत

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोटः**-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.N.I NO. UPHIN/2009/34814 मो0 नं0 -9511151254,E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त खबरें

साहब! मेरी आवंटन की मिली भूमि पर कर लिया कब्जा

लेखपाल के माध्यम से पत्थरगड़ी की गई इसके बाद भी.

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली परिसर में शनिवार को थाना समाधान दिवस का आयोजन हुआ। इस मौके पर सुरजीपुर मजरे कुम्भरोड़ा गांव के गोवर्धन ने शिकायती पत्र देकर बेचू का पुरवा गांव के रहने वाले एक व्यक्ति पर उसकी आवंटन की 10 बिस्वा भूमि पर कब्जा करने का आरोप लगाया। पीड़ित ने बताया कि आरोपी उसे जान से मार डालने की धमकी दे रहा है। बताया कि लेखपाल के माध्यम से पत्थरगड़ी की गई इसके बाद भी आरोपी उसकी जमीन नहीं छोड़ रहा है। पूरे राम गुलाम मजरे मदुरी गांव निवासी नंदकुमार ने बताया कि उसके ही गांव का रहने वाला एक व्यक्ति उसे खेत में जोतने बोने नहीं दे रहा है। गुंडई करता है। मारपीट करने पर आमादा होता है। बुजुर्ग ने बताया कि वह लंबे समय से चक्कर काट रहा है, लेकिन उसकी मदद नहीं हो पा रही है। पीड़ित बुजुर्ग ने आरोपी के अवैध हस्तक्षेप पर रोक लगाने की मांग की है। इस प्रकार प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह की अध्यक्षता में थाना समाधान दिवस का आयोजन हुआ। इसमें कुल 12 शिकायतें पंजीकृत की गई। जिनमें दो शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण किया गया। अन्य शिकायतों के निस्तारण के लिए दरोगा व राजस्व की टीम बनाकर भेजा गया है।

समर वेकेशन पार्टी में बच्चों ने की जमकर मस्ती पूल और झूले का उठाया लुफ्त

रायबरेली। सकल नारायण मेमोरियल पब्लिक स्कूल अटौरा बुजुर्ग रायबरेली में भीषण गर्मी के बीच बच्चों के चेहरे उसे समय खिल उठे जब विद्यालय में विशेष समर वेकेशन पार्टी का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम में नर्सरी से पांचवी कक्षा तक के बच्चों ने भाग लिया पार्टी की शुरुआत मिक्की माउस झूला के साथ हुई ।जिस पर बच्चों ने जमकर मस्ती की इस दौरान बच्चों के लिए पूल पार्टी का भी इंतजाम किया गया था जहां उन्होंने ठंडा पानी में बॉल और गुब्बारों से खूब खेला विद्यालय के प्रबंधक संजय सिंह ने बताया की ऐसी गतिविधियों से बच्चों का मानसिक विकास होता है और वे पढ़ाई के तनाव से दूर होकर तरोताजा महसूस करते हैं इस कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय के प्रभारी कौशलेंद्र सिंह ,नागेश सिंह, संतोष तिवारी ,सुरेंद्र यादव , अनामिका सिंह , रीमा मिश्रा , आकांक्षा सिंह , अंकिता पटेल, मंजू, शिवानी , सीतू सिंह, अन्नपूर्णा , शैल कुमारी , अम्बरीश श्रीवास्तव आदि ने किया तथा इस कार्यक्रम में समस्त अध्यापक व अध्यापिकाओं ने अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया।

पेट्रोल 87 तो डीजल 91 पैसे महंगा, 10 दिनों में तीसरी बार बढ़े दाम, CNG भी महंगी, कांग्रेस बोली- जनता को लूट रही मोदी सरकार

ब्यूरो प्रयागराज। मिडिल-ईस्ट में बढ़ते तनाव का असर अब भारत में आम लोगों की जेब पर साफ दिखाई देने लगा है। शनिवार को एक बार फिर पेट्रोल, डीजल और सीएनजी की कीमतों में बढ़ोतरी की गई। पेट्रोल के दाम में 87 पैसे प्रति लीटर, डीजल में 91 पैसे प्रति लीटर और सीएनजी में 1 रुपये प्रति किलो की बढ़ोतरी हुई है। बीते 10 दिनों में यह तीसरी बार है जब पेट्रोल और डीजल महंगे हुए हैं। इससे पहले 15 मई को पेट्रोल, डीजल और सीएनजी के दाम में 3-3 रुपये की बढ़ोतरी की गई थी। इसके बाद 19 मई को पेट्रोल 87 पैसे और डीजल 91 पैसे महंगा हुआ। लगातार बढ़ोतरी के चलते पिछले 10 दिनों में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में करीब 5 रुपये तक का इजाफा हो चुका है। वहीं, सीएनजी के दाम भी दूसरी बार बढ़ाए गए हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में पेट्रोल की कीमत 98.64 रुपये से बढ़कर 99.51 रुपये प्रति लीटर हो गई है। वहीं डीजल का दाम 91.58 रुपये से बढ़कर 92.49 रुपये प्रति लीटर पहुंच गया है। इसके अलावा सीएनजी अब 81.09 रुपये प्रति किलो के हिसाब से मिल रही है। लगातार बड़ रहे तेल की कीमतों को लेकर कांग्रेस ने मोदी सरकार को घेरा है। कांग्रेस ने एक पर एक पोस्ट में लिखा है कि महंगाई मैन' मोदी ने पेट्रोल-डीजल पर 9 दिन में 5 रुपए बढ़ा दिए। आज फिर पेट्रोल 94 पैसे और डीजल 95 पैसे महंगा कर दिया गया। मोदी को बस तेल कंपनियों के फायदे की चिंता है. एक तरफ जहां दुनियाभर की सरकारें अपनी जनता को राहत दे रही हैं, मोदी सरकार जनता को ही लूटने में लगी है। कभी तो जनता के भले के बारे में सोच लो, कब तक पूंजीपतियों का फायदा कराते रहोगे?

बांग्लादेश डिपोर्ट किए गए कुछ लोगों को वापस भारत लाया जाएगा,केंद्र सरकार का बड़ा ऐलान

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज- केंद्र सरकार ने शुक्रवार को उच्चतम न्यायालय को बताया कि उसने निर्वासित करके बांग्लादेश भेजे गए कुछ लोगों को भारत वापस लाने का फैसला किया है और उसके बाद उनकी भारतीय नागरिकता के दावे की पुष्टि की जाएगी। केंद्र सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली पीठ को बताया कि मामले के विशिष्ट तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए और इसे अन्य मामलों में अनुकरणीय मिसाल न मानते हुए, सरकार ने उन्हें वापस लाने का निर्णय लिया है। मेहता ने न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति विपुल एम पंचोली की सदस्यता वाली पीठ से कहा कि सरकार उन्हें वापस लाएगी और उसके बाद उनकी स्थिति की जांच करेगी। परिणाम के आधार पर, हम तदनुसार कदम उठाएंगे। शीर्ष विधि अधिकारी ने कहा कि इन व्यक्तियों को भारत वापस लाने में 8-10 दिन लग सकते हैं। पीठ ने मामले की अगली सुनवाई की तारीख जुलाई में तय की है। उच्चतम न्यायालय केंद्र सरकार की उस याचिका पर सुनवाई कर रहा था जिसमें कलकत्ता उच्च न्यायालय के 26 सितंबर, 2025 के उस आदेश को चुनौती दी गई थी, जिसमें उच्च न्यायालय ने सुनाली खातून और अन्य को बांग्लादेश निर्वासित करने के केंद्र सरकार के फैसले को रद्द कर दिया था और इसे 'अवैध' करार दिया था। पिछले साल तीन दिसंबर को शीर्ष अदालत ने 'मानवीय आधार' पर खातून और उनके आठ वर्षीय बच्चे को बांग्लादेश भेजे जाने के महीनों बाद भारत में प्रवेश की अनुमति दी थी।अदालत ने पश्चिम बंगाल सरकार को बच्चे की देखभाल करने का निर्देश दिया था और बीरभूम जिले के मुख्य चिकित्सा अधिकारी को गर्भवती खातून को मुफ्त प्रसव की सुविधा सहित हर संभव चिकित्सा सहायता प्रदान करने का निर्देश दिया था। न्यायालय ने 24 अप्रैल को केंद्र सरकार को अंतिम अवसर दिया और उसके अधिवक्ता को इस मामले में निर्देश लेकर अदालत को अवगत कराने को कहा। खातून के पिता भोदु शेख की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल और संजय हेगड़े ने कहा कि केंद्र सरकार का यह रवैया 'कुछ हद तक अनुचित' है, जिसने इस मामले में न्यायालय को अपने विचार नहीं बताए हैं। क्षेत्र के सेक्टर 26 में दो दशकों से अधिक समय से दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम कर रहे इन परिवारों को पिछले साल 18 जून को बांग्लादेशी होने के संदेह में पुलिस ने हिरासत में लिया और बाद में 27 जून को सीमा पार धकेल दिया। कि निर्वासित किए गए छह नागरिकों को एक महीने के भीतर भारत वापस लाया जाए और आदेश पर अस्थायी रोक लगाने की सरकार की अपील को खारिज कर दिया था।

गैस सिलेंडर संकट पर उपभोक्ताओं का हंगामा

● एसडीएम-सीओ ने कमला गैस एजेंसी की जांच की

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुल्तानपुर- कुड़वार कस्बे में गैस सिलेंडर की कमी को लेकर उपभोक्ताओं ने सुल्तानपुर-हलियापुर मार्ग जाम कर प्रदर्शन किया। सूचना मिलने पर प्रभारी निरीक्षक प्रवीण कुमार पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और लोगों को समझाकर जाम समाप्त कराया। मामले की गंभीरता को देखते हुए एसडीएम सदर उत्तम तिवारी, सीओ नगर सौरभ सामंत और जिलापूर्ति अधिकारी जीवेश मौर्य ने कमला इंडेन गैस एजेंसी के गोदाम का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने गोदाम में स्टॉक का मिलान किया, जिसमें सब कुछ सही पाया गया। अधिकारियों ने एजेंसी संचालकों को निर्देश दिया कि नया लोड आते ही उपभोक्ताओं को गैस सिलेंडर का वितरण सुनिश्चित कराया जाए। गौरतलब है कि शुक्रवार को भी यहां उपभोक्ताओं ने हंगामा किया था और एजेंसी संचालक पर अभद्रता व कालाबाजारी का आरोप लगाया था। इसके बाद जिलाधिकारी के आदेश पर आज टीम जांच के लिए पहुंची थी। कुड़वार स्थित कमला इंडेन गैस एजेंसी पर उपभोक्ताओं ने मनमानी और कालाबाजारी का आरोप लगाते हुए जमकर हंगामा और धरना प्रदर्शन किया। उपभोक्ताओं का आरोप है कि गैस वितरण में अनियमितता की जा रही है तथा समय पर सिलेंडर नहीं दिए जा रहे हैं, जिससे उन्हें भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सूचना मिलते ही कुड़वार थानाध्यक्ष प्रवीण कुमार पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और स्थिति को नियंत्रित किया।

पुलिस ने प्रदर्शन कर रहे लोगों को शांत कराते हुए उनकी समस्याएं सुनीं। उपभोक्ताओं ने प्रशासन से मामले की जांच कर उचित कार्रवाई की मांग की है। वहीं, पुलिस और संबंधित विभाग ने पूरे प्रकरण की जांच कर उचित कार्यवाही का भरोसा दिलाया है।

आवंटित भूमि पर भू-माफिया अवैध कब्जा कर निर्माण कार्य करने का कर रहे प्रयास

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज/रायबरेली: तहसील क्षेत्र के राजस्व गांव जनई में आवंटित भूमि पर अवैध कब्जे और जबरन निर्माण कराने के प्रयास का मामला सामने आया है। गांव निवासी राम बहादुर पुत्र राम औतार ने थाना दिवस में प्रार्थना पत्र देकर गांव के ही एक दबंग भू-माफिया पर उनकी आवंटित जमीन पर कब्जा करने और निर्माण कार्य की तैयारी करने का गंभीर आरोप लगाया है। पीड़ित ने प्रशासन से जमीन पर पुनः कब्जा दिलाने तथा आरोपी के खिलाफ कठोर कार्रवाई किए जाने की मांग की है। आपको बता दें कि, प्राप्त जानकारी के अनुसार, राजस्व गांव जनई स्थित गाटा संख्या 1219, जिसका रकबा 0.2530 हेक्टेयर है, पूर्व में गांव निवासी राम बहादुर पुत्र राम औतार के नाम आवंटित की गई थी। उक्त भूमि का नामांतरण राजस्व अभिलेखों में दर्ज है। पीड़ित का आरोप है कि गांव के ही राजेश पंडित पुत्र श्याम वेद ने दबंगई के बल पर जमीन पर कब्जा करने की नीयत से वहां खरफूस की मड़हिया रख दी है और निर्माण कार्य शुरू कराने की तैयारी कर रहा है। राम बहादुर ने अपने शिकायती पत्र में बताया कि, हल्का लेखपाल द्वारा पूर्व में भूमि की पैमाइश कर सीमांकन किया जा चुका है तथा मौके पर मेड़ भी बांधी गई थी। आरोप है कि, आरोपी ने उक्त मेड़ को काटकर अपने खेत में मिला लिया और अवैध रूप से भूमि पर कब्जा जमा लिया। इतना ही नहीं, निर्माण कार्य कराने के उद्देश्य से मौके पर गिट्टी, मौरंग, सीमेंट और ईंट भी गिरवा दी गई है। पीड़ित ने शासन-प्रशासन से मांग की है कि उसकी आवंटित भूमि को कब्जामुक्त कराकर उसे पुनः सुपुर्द किया जाए तथा दबंग एवं भू-माफिया प्रवृत्ति के लोगों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में गरीबों की जमीन पर अवैध कब्जे की घटनाओं पर रोक लग सके। इस संबंध में थाना अध्यक्ष चंदापुर अरविंद सिंह ने बताया कि मामले की शिकायत प्राप्त हुई है। राजस्व विभाग और पुलिस की संयुक्त टीम मौके पर पहुंचकर दोनों पक्षों की मौजूदगी में जांच कर निष्पक्ष निस्तारण करेगी।

गंगा एक्सप्रेसवे पर अनियंत्रित स्कॉर्पियो डिवाइडर में गिरी

केदारनाथ जा रहा राजस्थान का परिवार घायल

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र में गंगा एक्सप्रेसवे पर शनिवार सुबह बड़ा सड़क हादसा हो गया। चलती स्कॉर्पियो अचानक अनियंत्रित होकर क्रैश बैरियर तोड़ते हुए करीब 20 फीट नीचे डिवाइडर में जा गिरी। इससे स्कॉर्पियो में आग लग गई। हादसे में राजस्थान के एक ही परिवार के चार लोग घायल हो गए। राजस्थान के नागौर जनपद स्थित शिव कॉलोनी सदर निवासी श्रवणराम का परिवार दो वाहनों से 12 ज्योतिर्लिंगों के दर्शन यात्रा पर निकला था। परिवार काशी विश्वनाथ धाम में दर्शन करने के बाद केदारनाथ जा रहा था। शनिवार सुबह करीब छह बजे उमरामऊ गांव के पास देखते ही देखते वाहन अनियंत्रित हो गया और एक्सप्रेसवे के क्रैश बैरियर को तोड़ते हुए नीचे जा गिरा। हादसे के बाद मौके पर अफरा तफरी मच गई। हादसे में मोहित (16) पुत्र श्रवणराम, कनक (11) पुत्री श्रवणराम, भावना (13) पुत्री सुभाष और आरती (23) पुत्री पूनाराम समेत पांच लोग घायल हो गए। स्थानीय लोगों और पुलिस की मदद से सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। डॉक्टरों ने मोहित की हालत गंभीर देखते हुए प्राथमिक उपचार के बाद उसे जिला अस्पताल रायबरेली रेफर कर दिया। अन्य घायलों की हालत फिलहाल स्थिर बताई जा रही है।

भीषण गर्मी और लगातार हो रही अघोषित बिजली कटौती से परेशान क्षेत्र के उपभोक्ता

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज/रायबरेली: भीषण गर्मी और लगातार हो रही अघोषित बिजली कटौती से परेशान महराजगंज पावर हाउस क्षेत्र के उपभोक्ताओं का आक्रोश शनिवार को सड़क पर दिखाई दिया। ग्रामीणों और क्षेत्रीय उपभोक्ताओं ने महराजगंज पावर हाउस पहुंचकर जोरदार प्रदर्शन किया तथा अधिशासी अभियंता संदीप कुमार का घेराव कर जवाब तलब किया।आपको बता दें कि, प्रदर्शनकारियों का आरोप था कि, ग्रामीण क्षेत्रों में रात के समय लगातार 6 से 7 घंटे तक अंधाधुंध बिजली कटौती की जा रही है, जिससे आम जनजीवन पूरी तरह प्रभावित हो गया है। भीषण उमस और गर्मी के बीच लोगों का रात में घरों में रहना मुश्किल हो गया है। किसानों, छात्रों और छोटे व्यापारियों को भी भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। आंदोलनकारियों ने विभागीय अधिकारियों को चेतावनी देते हुए कहा कि, यदि मंगलवार तक अघोषित विद्युत कटौती पर प्रभावी रोक लगाकर नियमित बिजली आपूर्ति सुनिश्चित नहीं की गई, तो बुधवार को क्षेत्र के हजारों लोग बड़ा जनआंदोलन करने को बाध्य होंगे। इस दौरान अधिशासी अभियंता विद्युत संदीप कुमार ने उपभोक्ताओं को आश्वस्त करते हुए कहा कि, बढ़ती गर्मी के कारण शहरों में बिजली की मांग अचानक बढ़ गई है, जिससे आपूर्ति व्यवस्था प्रभावित हुई है। विभाग लगातार स्थिति सुधारने के प्रयास में जुटा हुआ है। उन्होंने बताया कि, उच्चाधिकारियों के साथ लगातार ऑनलाइन बैठकें और तकनीकी वार्ताएं चल रही हैं तथा जल्द ही उपभोक्ताओं को निर्बाध विद्युत आपूर्ति उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने संकट की इस घड़ी में उपभोक्ताओं से विभागीय अधिकारियों और कर्मचारियों का सहयोग करने की अपील भी की। प्रदर्शन के दौरान भाजपा मंडल अध्यक्ष अमित श्रीवास्तव, भाजपा नेता भोलू सिंह, युवा भाजपा नेता अमरेश कुमार अवस्थी उर्फ रिंकू, कांग्रेस नेता दिनेश मिश्रा, कांग्रेस नेता राहुल सिंह, अमरीश मिश्रा, रितेश द्विवेदी, रामू शुक्ल, राजकुमार शर्मा, शिवा सिंह, उज्वल अवस्थी, मो. समीम बीडीसी, संतलाल, योगेश शुक्ल, राजू तिवारी, रमाकांत मिश्रा, प्रकाश द्विवेदी, प्रदीप द्विवेदी सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रीय लोग मौजूद रहे।

मलके गांव पावर हाउस पर ग्रामीणों का आक्रोश फूटा,बिजली कटौती को लेकर घेराव कर प्रदर्शन

● रोस्टिंग के नाम पर पूरी रात गुल रहती बिजली, आक्रोशित ग्रामीणों ने पावर हाउस किया घेराव

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज(रायबरेली)। भीषण गर्मी के बीच बिजली कटौती को लेकर लोगों का गुस्सा अब सड़कों पर फूट पड़ा है।शनिवार को सरेनी क्षेत्र के मलके गाँव विद्युत उपकेंद्र पर ग्रामीणों ने हंगामा करते हुए बिजली विभाग के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।आरोप है कि रात में 5 से 6 घंटे तक अघोषित कटौती की जा रही है,जिससे लोगों का जीना मुश्किल हो गया है।मामला लालगंज विद्युत वितरण खंड के मलके गाँव पावर हाउस से जुड़ा है,जहां लगातार हो रही रात्रिकालीन बिजली कटौती से परेशान ग्रामीणों का सब्र जवाब दे गया।बड़ी संख्या में पहुंचे ग्रामीणों ने विद्युत उपकेंद्र का घेराव कर प्रदर्शन किया और बिजली विभाग,ऊर्जा मंत्री व योगी सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।ग्रामीणों का आरोप है कि भीषण गर्मी में रातभर बिजली गायब रहती है।पंखे-कूलर बंद होने से बच्चों,बुजुर्गों और महिलाओं का हाल बेहाल है।जब शिकायत करने पावर हाउस पहुंचते हैं,तो विभागीय कर्मचारी यह कहकर पल्ला झाड़ लेते हैं कि कटौती ऊपर से हो रही है।प्रदर्शन के दौरान ग्रामीणों ने अधिशासी अभियंता लालगंज को संबोधित ज्ञापन अवर अभियंता को सौंपते हुए बिजली व्यवस्था तत्काल सुधारने की मांग की।ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि अगर जल्द रात्रिकालीन कटौती बंद नहीं हुई तो बड़ा आंदोलन किया जाएगा और विद्युत वितरण खंड कार्यालय का घेराव होगा।फिलहाल भीषण गर्मी में बिजली संकट को लेकर लोगों में भारी नाराजगी है।अब देखना होगा कि बिजली विभाग ग्रामीणों की समस्या का समाधान करता है या फिर यह विरोध प्रदर्शन आगे और उग्र रूप लेता है।इस संबंध में अवर अभियंता हेमंत मिश्रा का कहना है कि इमरजेंसी रोस्टिंग हो रही है।समस्या का शीघ्र समाधान किया जाएगा।इस मौके पर कौशलेन्द्र सिंह,शिव प्रताप सिंह उर्फ अंकित सिंह,दीपक सिंह,शिव कुमार (ग्राम प्रधान सैरापुर), विजय शंकर तिवारी,रामू सिंह, सौरभ सिंह, गौरव शुक्ला,सतीश त्रिवेदी, नवीन मिश्रा, धीरेन्द्र सिंह, अमित कुमार, राहुल रावत सहित दर्जनों उपभोक्ता मौजूद रहे।

एक व्यक्ति की गोली लगने से संदिग्ध मौत

● जबड़े में लगी गोली, दूसरी पत्नी से पूछताछ

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुल्तानपुर - ओदरा गांव में शनिवार शाम एक 50 वर्षीय व्यक्ति की गोली लगने से संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है और मृतक की दूसरी पत्नी से पूछताछ की जा रही है। मृतक के जबड़े में गोली लगी थी। कोतवाली देहात थाना क्षेत्र के ओदरा निवासी मुफीद उर्फ बरसाती (50) को संदिग्ध अवस्था में गोली लगी। गोली की आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और ग्रामीणों ने पुलिस को सूचना दी। सूचना पर एसओ कोतवाली देहात धर्मवीर सिंह पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और जांच शुरू की। मुफीद गोसाईगंज थाना क्षेत्र के इटकौली स्थित एक पेट्रोल पंप पर गार्ड की नौकरी करता था, जिसे उसने चार महीने पहले छोड़ दिया था। हाल ही में उसने लगभग 16 लाख रुपये की जमीन बेची थी। एक साल पहले उसकी पहली पत्नी का निधन हो गया था, जिससे उसके दो बेटे और एक बेटी हैं। उसने सैफुल्लागंज में दूसरी शादी की थी। सीओ लंभुआ ऋतिक कपूर ने बताया कि शाम करीब 5 बजे पुलिस को ओदरा गांव में मुफीद अहमद (50) द्वारा खुद को गोली मारकर आत्महत्या करने की सूचना मिली थी। पुलिस टीम तुरंत घटनास्थल पर पहुंची और उसे सुरक्षित किया। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि मुफीद की पहली पत्नी का दो साल पहले निधन हो गया था, जिसके बाद वह डिप्रेशन में रहता था। आठ महीने पहले उसने बच्चों की देखभाल के लिए दूसरी शादी की थी। पुलिस के अनुसार, मुफीद अक्सर बच्चों और अपनी दूसरी पत्नी के साथ मारपीट करता था। जांच में पाया गया कि उसने अपनी लाइसेंसी राइफल से अपने 10 वर्षीय बेटे के सामने खुद को गोली मार ली। फील्ड यूनिट को बुलाया गया है और पंचायतनामा की कार्रवाई पूरी कर ली गई है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

वकीलों पर लाठीचार्ज को लेकर भड़के अखिलेश यादव, भाजपा से पूछे आठ तीखे सवाल

लखनऊ। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने अधिवक्ताओं पर लाठीचार्ज को लेकर भाजपा पर निशाना साधा। उन्होंने शनिवार को एक्स पर सवाल पूछते हुए लिखा, 'वकील कह रहे हैं कि लगे हाथों भाजपाइयों के घर, दुकान, कार्यालय, प्रतिष्ठान के कागज-नक्शे मंगाकर उनकी वैधता की भी जांच ली जाए। भाजपा और उसके संगी-साथियों द्वारा निर्माणों, आयोजनों व आपदाओं के नाम पर जगह-जगह से बटोरे गए तरह-तरह के चंदे-फंड का हिसाब भी मांगा जाए और उनका ऑडिट हो। जनता ये भी पूछ रही है कि इस बात का भी कानूनी पहलू समझाया जाए कि 'अनरजिस्टर्ड' लोग जमीन किसके नाम से लेकर अपना निर्माण करते हैं और ये संपत्तियां कैसे बेनामी नहीं हैं?' उन्होंने आगे लिखा, जनता की जिज्ञासा है कि गुप्त-गतिविधियों में संलिप्त भाजपाई संगी-साथियों के ऐसे निर्माणों को 'कार्यालय' कहा जाए या 'अड्डा'? ?इन 'संगी-साथी' का खर्चा-पानी कौन उठाता है? ? ये तथाकथित स्वदेशी 'संगी-साथी', विदेश भ्रमण करने क्यों जाते हैं? ?ये 'संगी-साथी' औपनिवेशिक समय से किसकी कठपुतली हैं? ?इन 'संगी-साथियों' का इतिहास मुखबिरी का क्यों रहा है? ?ये 'संगी-साथी' सामाजिक सौहार्द क्यों बिगाड़ते हैं? ?वकील ये भी पूछ रहे हैं कि अब ये 'संगी-साथी' किस नई साजिश के तहत 'मानस के मान' पर लाठियां चलवा रहे हैं?

लेखपाल परिवार थाने के सामने सड़क पर लेटा

● पुलिस पर कार्रवाई न करने का आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुल्तानपुर - लंभुआ कोतवाली के सामने शनिवार को लेखपाल राम जियावन अपने माता-पिता और बहन के साथ सड़क पर लेटकर प्रदर्शन करने लगे। परिवार ने पुलिस पर कार्रवाई न करने और बार-बार तहरीर बदलवाने का आरोप लगाया है। लेखपाल राम जियावन के अनुसार, 20 मई को गांव के कुछ लोगों ने उनके पिता राम खेलावन के साथ मारपीट की थी। उनकी बहन उर्मिला के साथ भी गाली-गलौज की गई थी। परिवार का आरोप है कि उनके भाई और भतीजे उनकी जमीन पर कब्जा करना चाहते हैं। वे परिवार को धमकाते हुए मारपीट का प्रयास कर रहे हैं। राम जियावन ने बताया कि इस घटना के बाद से कई बार थाने में शिकायत दी गई, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। उनका यह भी आरोप है कि शनिवार को भी पुलिस ने उनकी तहरीर कई बार बदलवाई, जिससे नाराज होकर परिवार ने सड़क पर प्रदर्शन शुरू कर दिया। प्रदर्शन की सूचना मिलते ही कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस अधिकारियों ने परिवार को समझाकर थाने ले गए और मामले की जांच कर नियमानुसार कार्रवाई का आश्वासन दिया। इसके बाद परिवार शांत हुआ। लंभुआ पुलिस ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। प्राप्त तहरीर के आधार पर विधिक कार्रवाई की जाएगी।

'दे दे प्यार दे 2' का वर्ल्ड टेलीविज़न प्रीमियर, इस रविवार 24 मई दोपहर 12 बजे, सिर्फ ज़ी सिनेमा पर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

दया शंकर त्रिपाठी

ब्यूरो प्रयागराज: हँसी, प्यार और फैमिली एंटरटेनमेंट से भरे एक मजेदार सफर के लिए 'दे दे प्यार दे 2' अब अपने वर्ल्ड टेलीविज़न प्रीमियर के साथ, इस रविवार, 24 मई को दोपहर 12 बजे, सिर्फ ज़ी सिनेमा पर आने वाली है। कॉमेडी और ड्रामा का स्तर और बढ़ाते हुए, यह सीक्वल एक हल्की-फुल्की और मनोरंजक प्यार की कहानी पेश करता है, जिसमें माता-पिता को मनाने और उनकी मंज़ूरी पाने की कोशिश के दौरान कई मजेदार और अप्रत्याशित परिस्थितियाँ सामने आती हैं। जब प्यार परिवार की उम्मीदों से टकराता है, तो कहानी में ढेर सारी उलझनें, हँसी और जज़्बाती पल देखने को मिलते हैं। कॉमेडी, रोमांस और फैमिली ड्रामे का यह शानदार मेल दर्शकों को घर बैठे एक मजेदार सिनेमाई अनुभव देने वाला है। अंशुल शर्मा के निर्देशन में बनी 'दे दे प्यार दे 2' को टी-सीरीज़ के भूषण कुमार और कृष्ण कुमार, साथ ही लव फिल्म्स के लव रंजन और अंकुर गर्ग ने प्रोड्यूस किया है। फिल्म में अजय देवगन, रकुल प्रीत सिंह, आर माधवन, मीज़ान जाफरी, जावेद जाफरी, इशिता दत्ता और गौतमी कपूर जैसे कलाकार नजर आएँगे। यह सीक्वल मूल फिल्म की खूबसूरती को बरकरार रखते हुए नए पहलू, नए टकराव और ढेर सारे मजेदार पलों को जोड़ता है, जो इसे एक बेहद दिलचस्प अनुभव बनाते हैं। अजय देवगन ने कॉमेडी में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। अपने सहज अंदाज़, शानदार कॉमिक टाइमिंग और सधी हुई एक्टिंग से उन्होंने हमेशा दर्शकों को खूब एंटरटेन किया है। सालों से वे इस जॉनर में अपनी बहुमुखी प्रतिभा साबित करते आए हैं और 'दे दे प्यार दे 2' उनके इसी मजेदार सफर में एक और शानदार फिल्म जोड़ती है। दे दे प्यार दे 2 भावनाओं, रिश्तों, उलझनों और अप्रत्याशित परिस्थितियों से भरी हुई फिल्म है, जो बेहद मनोरंजक तरीके से सामने आती है। यह ऐसी फिल्म है, जिसका आप अपने परिवार के साथ बैठकर पूरा आनंद ले सकते हैं और मैं उत्साहित हूँ कि अब दर्शक ज़ी सिनेमा पर इसके वर्ल्ड टेलीविजन प्रीमियर के साथ इसे एक साथ एंजॉय करेंगे। ' फिल्म् में एक पिता के तौर किरदार अपनी बेटी को लेकर बहुत प्रोटेक्टिव है, खासकर तब जब उसकी लव लाइफ उसे कई तरह से चौंका देती है। , ड्रामेटिक भी और अनजाने में मजेदार भी। रकुल प्रीत सिंह किरदार दो ऐसे लोगों के बीच फंस जाता है, जिन्हें लगता है कि वही उसके लिए सबसे सही फैसला ले सकते हैं और यहीं से पूरी मस्ती शुरू होती है। एक तरफ वह इंसान है जिससे वह प्यार करती है और दूसरी तरफ उसके पिता, लेकिन दोनों में से कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं है। इस फिल्म की सबसे खास बात यह लगी कि कॉमेडी के पीछे रिश्तों, जजमेंट और फैमिली एक्सपेक्टेंस का एक बहुत रिलेटेबल जज़्बाती पहलू भी है। यह फिल्म मजेदार भी है, उलझनों से भरी भी और ऐसे पलों से भरी हुई है, जिनसे परिवार के लोग ज़ी सिनेमा पर देखते ही जुड़ाव महसूस करेंगे। ' लेकिन, अपने पिता के साथ स्क्रीन शेयर करना इस अनुभव को और भी खास बना गया। परिवार के साथ काम करते वक्त एक अलग ही सहजता और मस्ती अपने आप आ जाती है और दर्शकों को हमारा साथ में डांस करना भी काफी पसंद आएगा। ज़ी सिनेमा पर दर्शकों के लिए यह पूरी तरह हँसी से भरा सफर होने वाला है। 'डायरेक्टर अंशुल 'दे दे प्यार दे 2 के साथ यह दिखाना चाहते थे कि जब रिश्तों में परिवार, उनकी राय और पीढ़ियों के अंतर शामिल होते हैं, तो प्यार किस तरह बदलता है। फिल्म सिर्फ एज गैप वाले रिश्ते की कहानी नहीं है, बल्कि उन असुरक्षाओं, प्रोटेक्टिव नेचर और जज़्बाती बोझ की भी कहानी है, जो हर किरदार अपने साथ लेकर चलता है। ' 'दे दे प्यार दे 2' में अजय देवगन द्वारा निभाया हँसी, मस्ती और हलचल से भरपूर इस फैमिली एंटरटेनर 'दे दे प्यार दे 2' के लिए इस रविवार, 24 मई को दोपहर 12 बजे, सिर्फ ज़ी सिनेमा पर।

संक्षिप्त खबरें

बुढ़ियाडाबर में मां भगवती एवं हनुमान प्राण प्रतिष्ठा महायज्ञ का हुआ शुभारंभ

भव्य कलश यात्रा के साथ धार्मिक माहौल हुआ भक्तिमय

चौपारण, हजारीबाग : चौपारण प्रखंड के बरमोरिया पंचायत अंतर्गत ग्राम बुढ़ियाडाबर में आयोजित श्री श्री 108 मां भगवती एवं हनुमान प्राण प्रतिष्ठा वार्षिकोत्सव महायज्ञ का शुभारंभ गुरुवार को श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ हुआ। महायज्ञ के प्रथम दिन भव्य कलश यात्रा निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में महिला-पुरुष श्रद्धालुओं ने भाग लेकर पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे बरही विधायक मनोज कुमार यादव ने मुख्य पुजारी भीखन यादव को कलश प्रदान कर विधिवत कलश यात्रा को रवाना किया। गाजे-बाजे, शंखध्वनि और जयकारों के बीच निकली कलश यात्रा गांव के विभिन्न मार्गों का भ्रमण करते हुए यज्ञ मंडप पहुंची। वहां वैदिक मंत्रोच्चारण एवं धार्मिक विधि-विधान के साथ अनुष्ठान प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर विधायक मनोज कुमार यादव ने कहा कि धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन समाज को जोड़ने का सशक्त माध्यम हैं। ऐसे आयोजनों से सामाजिक समरसता, भाईचारा और आध्यात्मिक चेतना को मजबूती मिलती है। उन्होंने कहा कि यज्ञ और पूजा-अर्चना से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है तथा लोगों की आस्था और संस्कृति के प्रति जुड़ाव बढ़ता है। विधायक ने आयोजन समिति को सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में इस तरह के आयोजन भारतीय परंपरा और संस्कृति को जीवंत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। महायज्ञ के दौरान श्रद्धालुओं में भारी उत्साह देखने को मिला। पूरे गांव में भक्तिमय वातावरण बना रहा। आयोजन को सफल बनाने में ग्रामीणों एवं समिति के सदस्यों की सक्रिय भागीदारी रही। मौके पर विधायक प्रतिनिधि राजदेव यादव, मुखिया सरिता देवी, पंचायत समिति सदस्य महेंद्र यादव, सुधीर यादव, सुदर्शन यादव, रामसेवक यादव, सुखदेव शर्मा, कैलाश यादव, चंदरदेव यादव, संजय यादव, कृष्णा यादव, नेमधारी यादव, कपिल यादव, मधु यादव, सुदय यादव, रघुनी शर्मा, राजेश यादव, इंदर देव गुरु, पवन प्रजापति, रामसुंदर प्रजापति, विनोद यादव, रामबृक्ष यादव, रामावतार यादव, पोखन यादव सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

लातेहार व्यवहार न्यायालय में डिजिटल न्याय व्यवस्था की नई शुरुआत

वरिष्ठ अधिवक्ता लाल अरविंद नाथ शाहदेव ने बताया ऐतिहासिक पहल

लातेहार, झारखंडः– व्यवहार न्यायालय में न्यायिक प्रक्रिया को आधुनिक और सुगम बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश शेषनाथ सिंह के प्रयास से शुक्रवार से न्यायालय में हाईब्रिड मोड पर कार्य की शुरुआत की गई। इस नई व्यवस्था के तहत अधिवक्ता अब ऑनलाइन माध्यम से भी न्यायालयीन कार्यों में भाग ले सकेंगे। हाईब्रिड मोड के तहत जमानत मामलों की सुनवाई ऑनलाइन माध्यम से संपन्न हुई। इस दौरान बार एसोसिएशन अध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिवक्ता लाल अरविंद नाथ शाहदेव ने सक्रिय रूप से ऑनलाइन बहस में भाग लेते हुए इस पहल को न्यायिक व्यवस्था में एक ऐतिहासिक बदलाव बताया। ऑनलाइन सुनवाई में अधिवक्ता मिथलेश सिंह, डालटनगंज से महेंद्र गिरि एवं अरविंद गुप्ता, लातेहार स्टेशन से विवेक गुप्ता तथा कुमार अमित ने भी भाग लेते हुए अपनी दलीलें प्रस्तुत कीं। वरिष्ठ अधिवक्ता लाल अरविंद नाथ शाहदेव ने कहा कि हाईब्रिड मोड न्यायिक व्यवस्था को नई दिशा देगा। इससे दूरदराज क्षेत्रों के अधिवक्ताओं और आम लोगों को काफी सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि अब अधिवक्ता अपने घर या कार्यालय से ही न्यायालयीन कार्य कर सकेंगे, जिससे समय की बचत होगी और न्याय प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनेगी। उन्होंने इस पहल के लिए प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश शेषनाथ सिंह के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह व्यवस्था लातेहार न्यायालय के लिए एक मील का पत्थर साबित होगी। नई व्यवस्था की शुरुआत के बाद अधिवक्ताओं में उत्साह का माहौल देखा गया। वहीं तकनीकी सहयोग के लिए न्यायालयकर्मी अभय कुमार सिंह की भूमिका भी सराहनीय रही।

त्विषा शर्मा मौत मामले में समर्थ सिंह को नहीं मिली राहत, हाई कोर्ट ने 7 दिन की पुलिस रिमांड पर भेजा

● भोपाल की मॉडल और एक्ट्रेस त्विषा शर्मा की मौत के मामले में मुख्य आरोपी पति समर्थ सिंह को कोर्ट ने सात दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया है। समर्थ ने अग्रिम जमानत याचिका वापस ले ली थी और उसे जबलपुर कोर्ट परिसर से हिरासत में लिया गया, जहां पुलिस अब उससे पूछताछ करेगी।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

दिल्ली। भोपाल की मॉडल और एक्ट्रेस त्विषा शर्मा मौत मामले में मुख्य आरोपी पति समर्थ सिंह को कोर्ट ने सात दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया है। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर मामले की पूरी सच्चाई जानने की कोशिश करेगी। मीडिया से बचाने के लिए समर्थ को कोर्ट परिसर में पीछे के रास्ते से लाया गया और वहीं कानूनी प्रक्रिया पूरी की गई। समर्थ सिंह ने गिरफ्तारी से बचने के लिए जबलपुर हाई कोर्ट में अग्रिम जमानत याचिका दायर की थी। हालांकि शुक्रवार को सुनवाई के दौरान उसने अपनी याचिका वापस ले ली। इसके बाद हाई कोर्ट ने उसे कटारा हिल्स थाना प्रभारी या जांच अधिकारी के सामने आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि समर्थ सिंह को शरण देने वालों के खिलाफ भी कार्रवाई की जाएगी। साथ ही यह भी जांच की जा रही है कि वह इतने दिनों तक कहां छिपा रहा और किन लोगों ने उसकी मदद की। पुलिस ने यह भी कहा कि मामले में नोटिस भेजे जाने के बावजूद गिरिबाला सिंह अब तक पूछताछ के लिए पेश नहीं हुई हैं।

कोर्ट परिसर से हिरासत में लिया गया आरोपी

हाई कोर्ट के आदेश के बाद समर्थ सिंह जबलपुर जिला कोर्ट में सरेंडर करने पहुंचा था, लेकिन अदालत ने उसका समर्पण स्वीकार नहीं किया। इसके बाद वह गिरफ्तारी से बचने के लिए कोर्ट परिसर के एक कमरे में छिप गया। इसी दौरान भोपाल और जबलपुर पुलिस को उसके कोर्ट में मौजूद होने की जानकारी मिली। दोनों शहरों की पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए उसे हिरासत में ले लिया। जरूरी कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के बाद जबलपुर पुलिस ने आरोपी को भोपाल पुलिस के हवाले कर दिया। इसके बाद पुलिस टीम उसे देर रात भोपाल लेकर पहुंची।

12 मई को मिला था त्विषा का शव

गौरतलब है कि भोपाल के कटारा हिल्स इलाके में रहने वाली रिटायर्ड जज गिरिबाला सिंह की बहू त्विषा शर्मा का शव 12 मई को संदिग्ध परिस्थितियों में घर में फंदे से लटका मिला था। घटना के बाद त्विषा के मायके पक्ष ने पति समर्थ सिंह और सास गिरिबाला सिंह पर हत्या का आरोप लगाया था। मामले के सामने आने के बाद से पुलिस लगातार जांच कर रही है और अब आरोपी से पूछताछ के जरिए कई अहम खुलासों की उम्मीद की जा रही है।

ऋषिकेश-कर्णप्रयाग हाईवे पर हादसा: 100 मीटर खाई में गिरी बाइक, असम के युवक की हुई मौत

● ऋषिकेश-कर्णप्रयाग राष्ट्रीय राजमार्ग पर गलनाऊं के पास एक दर्दनाक सड़क हादसे में मोटरसाइकिल 100 मीटर गहरी खाई में गिर गई।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कर्णप्रयाग (चमोली)। ऋषिकेश-कर्णप्रयाग राष्ट्रीय राजमार्ग पर शनिवार को गलनाऊं के पास दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। अनियंत्रित होकर एक मोटरसाइकिल गहरी खाई में जा गिरी। हादसे में एक युवक की मौत हो गई, जबकि दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को पुलिस, एसडीआरएफ और स्थानीय लोगों की मदद से करीब 100 मीटर गहरी खाई से निकालकर उप जिला चिकित्सालय कर्णप्रयाग पहुंचाया गया। कोतवाली प्रभारी विनोद थपलियाल ने बताया कि 112 डायल के माध्यम से सूचना मिली थी कि गलनाऊं के पास एक मोटरसाइकिल दुर्घटनाग्रस्त होकर खाई में गिर गई है। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया गया। हादसे में सोम बोस्या (25) पुत्र रोबिन बोस्या निवासी जोरहाट, असम की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि ऋतिक (25) पुत्र धनंजय निवासी बक्सर (बिहार) गंभीर रूप से घायल हो गया। दोनों को स्थानीय लोगों, पुलिस, होमगार्ड, एसडीआरएफ और डीडीआरएफ की मदद से खाई से बाहर निकाला गया। इसके बाद 108 एंबुलेंस सेवा से उन्हें उप जिला चिकित्सालय कर्णप्रयाग पहुंचाया गया। बताया जा रहा है कि दोनों युवक अपने अन्य साथियों के साथ देहरादून से बदरीनाथ धाम की ओर जा रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, गलनाऊं के पास ढलान पर मोटरसाइकिल अचानक अनियंत्रित होकर सड़क किनारे लगे क्रैश बैरियर से टकरा गई, जिससे दोनों युवक खाई में जा गिरे। ऋतिक एक पेड़ और चट्टान के सहारे खाई में अटक गया, जबकि पीछे बैठे सोम बोस्या गहरी खाई में गिरने से गंभीर रूप से घायल हो गए। उप जिला चिकित्सालय के सीएमएस डॉ. बीपी पुरोहित ने बताया कि सोम बोस्या को अस्पताल लाने पर चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया, जबकि घायल ऋतिक का उपचार जारी है।

यात्रियों को राहत, रेल प्रशासन को क्षेत्रवासियों का धन्यवाद

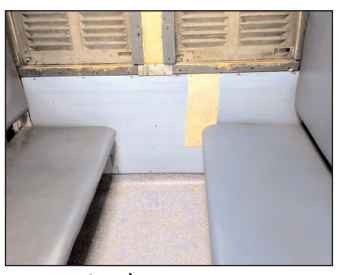

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि: श्रीभूमि जिले के दुल्लभछड़ा से ट्रेन संख्या 55687 सिलचर जाने वाली ट्रेन में लंबे समय से चली आ रही यात्रियों की समस्या का अंत हो गया है। बरसात के समय खिड़कियाँ खुली रहने के कारण कोच के अंदर पानी प्रवेश कर सीटें गीली हो जाती थीं, जिससे यात्रियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। बाद में विभिन्न समाचार पत्रों और चैनलों के माध्यम से यात्रियों की इस शिकायत को प्रमुखता से उठाया गया। यात्री कल्याण को ध्यान में रखते हुए यह मामला रेलवे विभाग के उच्च अधिकारियों और प्रशासन के संज्ञान में आया, जिसके बाद आवश्यक कदम उठाए गए। इसके परिणामस्वरूप आज एक संतोषजनक स्थिति देखने को मिली। प्रत्येक कोच के दरवाजे और खिड़कियाँ ठीक से बंद रखी गई।

तेज बारिश के बावजूद ट्रेन के अंदर पानी प्रवेश नहीं कर सका और सीटें पूरी तरह सूखी एवं आरामदायक रहीं। इस बेहतर व्यवस्था के कारण यात्रियों ने बिना किसी परेशानी के अपनी यात्रा पूरी की और गंतव्य तक पहुँचे। क्षेत्रवासियों और यात्रियों ने रेलवे प्रशासन एवं संबंधित अधिकारियों के प्रति आभार और धन्यवाद व्यक्त किया।

भोंडसी जेल में संजीव अरोड़ा से मिलेंगे केजरीवाल और मान, 100 करोड़ के घोटाले में ED ने किया था गिरफ्तार

दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान शुक्रवार को गुरुग्राम स्थित भोंडसी जिला जेल पहुंचेंगे। दोनों नेता जेल में बंद पंजाब के मंत्री संजीव अरोड़ा से मुलाकात करेंगे। जानकारी के अनुसार संजीव अरोड़ा इस समय गुरुग्राम की भोंडसी जिला जेल में बंद हैं। अरविंद केजरीवाल और भगवंत मान की उनसे मुलाकात का समय दोपहर 2 बजे तय किया गया है। मुलाकात को लेकर सुरक्षा व्यवस्था भी कड़ी किए जाने की संभावना है। संजीव अरोड़ा को प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने कथित मनी लॉन्ड्रिंग और फर्जी जीएसटी लेनदेन से जुड़े मामले में गिरफ्तार किया था। उन पर करीब 100 करोड़ रुपये के कथित फर्जी जीएसटी नेटवर्क और वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े आरोप हैं। ईडी ने छापेमारी के बाद उन्हें गिरफ्तार किया था और बाद में अदालत ने उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया। गुरुग्राम की अदालत ने हाल ही में संजीव अरोड़ा को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा था, जिसके बाद उन्हें भोंडसी जिला जेल में रखा गया है।

अक्षय के नक्शे कदम पर चले वरुण; इश्क के चक्कर में फैला रायता; ट्रेलर आउट

● वरुण धवन की आगामी फिल्म 'है जवानी तो इश्क होना है' का ट्रेलर जारी हो गया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। वरुण धवन की आगामी फिल्म 'है जवानी तो इश्क होना है' सिनेमाघरों में रिलीज के लिए तैयार है। बड़े पर्दे पर दस्तक देने से पहले फिल्म का ट्रेलर जारी किया गया है। डेविड धवन के निर्देशन में बनी फिल्म 'है जवानी तो इश्क होना है' एक रोम-कॉम ड्रामा है। फिल्म में वरुण धवन, मृणाल ठाकुर और पूजा हेगड़े मुख्य भूमिकाओं में हैं। फिल्म का ट्रेलर जारी हो गया है।

फिल्म का ट्रेलर आउट

जस (वरुण धवन) की जिंदगी में सारा रायता बच्चे और ज्यादा प्यार की वजह से फैलता है। ट्रेलर की शुरुआत ही उनके और बानी (मृणाल ठाकुर) के बीच कोर्ट में खटपट से होती है। जस का ओवर लव और बच्चे के ऑब्सेशन से उसकी पत्नी बानी पक चुकी है। दोनों अलग होने का सोच चुके हैं।

बीवी-गर्लफ्रेंड के चक्कर में फंसा हीरो

तभी वरुण धवन को प्रीत (पूजा हेगड़े) से दोबारा इश्क हो जाता है। प्रीत के साथ जस का अच्छा-खासा रिलेशन चल रहा होता है, लेकिन तभी उसकी जिंदगी में पत्नी बानी की एंट्री हो जाती है जो मां बनने वाली है।

वहीं दूसरी ओर प्रीत भी मां बनने वाली है जिससे उसकी शादी भी नहीं हुई है। अब गर्लफ्रेंड-बीवी और होने वाले बच्चों के चक्कर में जस का बेड़ा गर्क हो गया है। वह कैसे यह सब हैंडल करेगा, यह फिल्म देखने के बाद ही पता चलेगा।

गरम मसाला की आएगी याद?

हालांकि, फिल्म का ट्रेलर देख लोग इसकी तुलना गरम मसाला से कर रहे हैं। दरअसल, गरम मसाला में अक्षय कुमार का कैरेक्टर एक घर में तीन-तीन गर्लफ्रेंड को रखता है। वरुण धवन की फिल्म में उसी तरह का सीन है जिसे देख लोग इसे गरम मसाला मिस्क्ड बता रहे हैं।

कब रिलीज होगी फिल्म?

फिल्म में बीवी नंबर 1 का चुनरी चुनरी गाना भी शामिल किया गया है। फिल्म में मौनी रॉय ने वरुण की ऑन-स्क्रीन नकली मां का किरदार निभाया है। यह फिल्म सिनेमाघरों में 5 जून को रिलीज होने वाली है।

भारतीय मेजर अभिलाषा बराक को संयुक्त राष्ट्र का बड़ा सम्मान, मिला 'मिलिट्री जेंडर एडवोकेट' अवार्ड

● लेबनान में संयुक्त राष्ट्र मिशन में सेवारत भारतीय शांति रक्षक मेजर अभिलाषा बराक को 'मिलिट्री जेंडर एडवोकेट ऑफ द ईयर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान महिलाओं और लड़कियों के सशक्तिकरण तथा शांति सैनिकों के लिए लैंगिक संवेदनशीलता प्रशिक्षण में उनके योगदान के लिए दिया गया है।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

दिल्ली। लेबनान में संयुक्त राष्ट्र मिशन में सेवारत भारतीय शांति रक्षक मेजर अभिलाषा बराक को विश्व संस्था द्वारा मिलिट्री जेंडर एडवोकेट आफ द ईयर अवार्ड से सम्मानित किया गया है। पश्चिम एशियाई देश में तैनाती के दौरान महिलाओं और लड़कियों के सशक्तिकरण के लिए उनके प्रयासों के लिए इस पुरस्कार से उन्हें नवाजा गया है।संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन ने शुक्रवार को कहा, 'यह घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है कि मेजर अभिलाषा बराक को 2025 का यूएन मिलिट्री जेंडर एडवोकेट आफ द ईयर अवार्ड से सम्मानित किया गया है। उन्हें महिलाओं और किशोरियों के लिए उनके सामुदायिक जुड़ाव और सामुदायिक गतिविधियों तथा शांति रक्षकों के लिए लैंगिक संवेदनशीलता प्रशिक्षण के लिए सम्मानित किया जा रहा है।' बराक लेबनान में संयुक्त राष्ट्र अंतरिम बल (यूएनआइएफआइएल) में महिला सहभागिता दल (एफईटी) की कमांडर के रूप में भारतीय बटालियन में सेवारत हैं।

भारत के लिए गर्व की बात

वह भारतीय सेना की पहली महिला लड़ाकू हेलीकाप्टर पायलट भी हैं। उन्हें संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में सम्मानित किया जाएगा, जब विश्व निकाय 29 मई को प्रतिवर्ष मनाए जाने वाले संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों के अंतरराष्ट्रीय दिवस का आयोजन करेगा। भारत के लिए गर्व का क्षण है, क्योंकि बराक देश की तीसरी प्राप्तकर्ता हैं जिन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है। उनसे पहले मेजर सुमन गवानी और मेजर राधिका सेन को संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में उनके सराहनीय कार्य के लिए सम्मानित किया गया था।

श्रीभूमि जिले के भेटारबंद चिकित्सालय की बदहाल स्थिति से स्थानीय लोगों में रोष

● प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री से हस्तक्षेप की मांग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि : श्रीभूमि जिले के दुल्लभछड़ा क्षेत्र स्थित भेटारबंद राजकीय चिकित्सालय की जर्जर स्थिति को लेकर स्थानीय लोगों ने गहरा रोष व्यक्त किया है। आरोप है कि लंबे समय से अस्पताल भवन के कई हिस्से टूट-फूट की स्थिति में पड़े हैं। साथ ही अस्पताल परिसर में जलभराव, गंदगी और अस्वच्छ वातावरण के कारण मरीजों और आम लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग इलाज के लिए इस चिकित्सालय में आते हैं, लेकिन पर्याप्त साफ-सफाई और रखरखाव के अभाव में अस्पताल की स्थिति दिन-प्रतिदिन खराब होती जा रही है। अस्पताल की दीवारों में दरारें, टूटे हुए दरवाजे-खिड़कियां और गंदा वातावरण लोगों की चिंता बढ़ा रहा है। स्थानीय निवासियों का आरोप है कि इस संबंध में कई बार संबंधित अधिकारियों को अवगत कराया गया, लेकिन अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। इससे आम जनता में नाराजगी लगातार बढ़ती जा रही है। स्थानीय लोगों ने चिकित्सालय की जल्द मरम्मत, नियमित साफ-सफाई और आवश्यक विकास कार्यों की मांग की है। साथ ही प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री से मामले में हस्तक्षेप कर शीघ्र आवश्यक कदम उठाने की अपील की है।

अर्जुन तेंदुलकर का आखिरकार हो गया डेब्यू, आखिरी मैच में लखनऊ ने दे दिया मौका

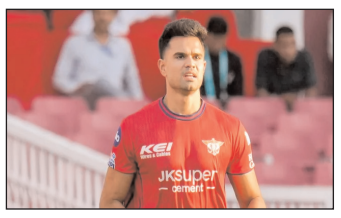

दिल्ली। सचिन तेंदुलकर के बेटे अर्जुन तेंदुलकर को आखिरकार आईपीएल 2026 में खेलने का मौका मिला है। उन्हें सीजन के दौरान अब तक एक भी मैच में खेलने का मौका नहीं मिला था लेकिन सीजन के आखिरी मैच में उन्हें मौका मिला है। अर्जुन को लखनऊ सुपर जायंट्स ने 30 लाख रुपए में अपने साथ जोड़ा था। अब पंजाब किंग्स के खिलाफ मुकाबले में अर्जुन को प्लेइंग 11 में शामिल किया गया है। लखनऊ की टीम पहले ही प्लेऑफ की रेस से बाहर हो चुकी है। उनकी टीम अंक तालिका में 10वें स्थान पर है। एलएसजी पिछले कुछ मैचों में बेंच पर बैठे खिलाड़ियों को आजमा रही है और इसी कड़ी में तेंदुलकर को भी शामिल किया गया है। अर्जुन इस मुकाबले के जरिए लखनऊ के लिए अपना डेब्यू कर रहे हैं। इससे पहले वे मुंबई के लिए खेल चुके हैं।

जलते घर में घुसकर शाहदरा पुलिस ने 1 साल के बच्चे समेत तीन लोगों की बचाई जान, लपटों से घिर गया था परिवार

दिल्ली। शाहदरा जिले में दिल्ली पुलिस के जवानों ने बहादुरी दिखाते हुए एक जलते हुए मकान से एक साल के बच्चे समेत तीन लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला। गैस सिलिंडर में रिसाव से आग लगी थी। अजीत नगर इलाके की गली नंबर-नौ में एक में आग लगी थी। आग उस वक्त लगी जब महिला खाना बना रही थी। गैस सिलेंडर में लीकेज होने के कारण अचानक आग लग गई। देखते ही देखते आग ने पूरे कमरे को अपनी चपेट में ले लिया और अंदर मौजूद परिवार फंस गया।

इसी दौरान इलाके में बीट पेट्रोलिंग कर रहे शाहदरा पुलिस के एएसआई कुलदीप, हेड कांस्टेबल राहुल, कांस्टेबल विपिन और कांस्टेबल सनी ने धुआं और लोगों की चीख-पुकार सुनी। बिना समय गंवाए पुलिसकर्मी मौके पर पहुंचे और अपनी जान जोखिम में डालकर आग से घिरे मकान के अंदर दाखिल हो गए। पुलिस टीम ने पहली मंजिल पर फंसे तीन लोगों 34 वर्षीय अरशद अली, 28 वर्षीय अर्शाना और 1 वर्षीय म अरमान अली को सुरक्षित बाहर निकाला। आग और धुएं के बीच पुलिसकर्मियों की सूझबूझ और साहस से बड़ा हादसा टल गया।

पकौड़ी खाई, फिर 1000 के लिए रेता बहन-भांजे का गला; पुलिस मुठभेड़ में मौसेरा भाई गिरफ्तार

● दक्षिण-पूर्वी दिल्ली के गोविंदपुरी में मां-बेटे की हत्या के आरोपी सौरभ को पुलिस ने मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया। आरोपी ने पुलिस पर फायरिंग की, जिसके जवाब में पुलिस ने उसके पैर में गोली मारकर काबू किया।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

दिल्ली। दक्षिण-पूर्वी दिल्ली के गोविंदपुरी इलाके में मां और बेटे की सनसनीखेज हत्या के मामले में पुलिस ने मुठभेड़ के बाद कातिल को गिरफ्तार कर लिया। ये कोई और नहीं बल्कि मृतका शारदा का मौसेरा भाई है। जिसने बेरहमी से अपनी बहन और भांजे को मौत के घाट उतार दिया। वह वारदात के बाद से फरार था। पुलिस के अनुसार मुठभेड़ के दौरान आरोपी ने पुलिस टीम पर चार राउंड फायरिंग की, जिसके जवाब में पुलिस ने उसके पैर में गोली मारकर काबू किया। उसने 20 मई को गोविंदपुरी में शारदा और उनके बेटे की हत्या कर दी गई थी। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक जांच में सामने आया कि वारदात को अंजाम देने वाला शारदा का मौसेरा भाई सौरभ है, जो संगम विहार में रहता है और सासाहिक बाजार में रेहड़ी लगाने का काम करता है। आरोपी नशे का आदी बताया जा रहा है। पुलिस के अनुसार सौरभ के खिलाफ पहले से भी कई आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। प्रारंभिक जांच में पता चला कि घटना वाली रात सौरभ शारदा के घर पहुंचा था। शारदा ने उसे पकौड़ी बनाकर खिलाई थी। इसी दौरान आरोपी ने एक हजार रुपये मांगे। पैसे को लेकर दोनों के बीच विवाद हो गया। आरोप है कि गुस्से में सौरभ ने शारदा के बाल पकड़कर रसोई में रखे चाकू से उनका गला काट दिया। शोर सुनकर जब उनका बेटा किचन में पहुंचा तो आरोपी ने उस पर भी ताबड़तोड़ हमला कर उसकी हत्या कर दी। वारदात के बाद आरोपी घर में रखे करीब 10 लाख रुपये लेकर फरार हो गया था। मामले की जांच में जुटी दक्षिण-पूर्वी जिले की एंटी नारकोटिक्स टीम को सूचना मिली कि आरोपी घाटी पार्क इलाके में बैठा है और स्मैक पी रहा है। पुलिस टीम ने इलाके की घेराबंदी कर उसे सरेंडर करने को कहा, लेकिन आरोपी ने पुलिस पर फायरिंग शुरू कर दी।जवाबी कार्रवाई में पुलिस ने आरोपी के पैर में गोली मार दी, जिसके बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया। घायल आरोपी को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस मामले में आगे की जांच कर रही है।

IPL 2026 में बिहार का डंका! ये 3 खिलाड़ी मचा रहे तबाही, अकेले पूरी टीम पर पड़ रहे भारी

● IPL 2026 अब अपने अंतिम पड़ाव में पहुंच चुका है। प्लेऑफ की 3 टीम तय हो गई हैं और चौथे स्थान के लिए 3 ही टीमों के बीच जंग हो रही है।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग 2026 अब अपने अंतिम पड़ाव में पहुंच चुका है। प्लेऑफ की 3 टीम तय हो गई हैं और चौथे स्थान के लिए 3 ही टीमों के बीच जंग हो रही है। 26 मई से प्लेऑफ के मुकाबले खेले जाएंगे और फाइनल 31 मई के होगा। आईपीएल में अलग-अलग राज्य के प्लेयर अपने प्रदर्शन का लोहा मनवा रहे हैं। 19वें सीजन में बिहारी प्लेयर्स का भी डंका बज रहा है। 3 खिलाड़ी गेंद और बल्ले से तबाही मचा रहे हैं। अगर इनका दिन होता है तो यह मैच का रुख ही पलट देते हैं और अकेले विक्षपी टीम पर भारी पड़ते हैं। इन प्लेयर्स में पटना के ईशान किशन, समस्तीपुर के वैभव सूर्यवंशी और गोपालगंज के तेज गेंदबाज साकिब हुसैन शामिल हैं।

वैभव सूर्यवंशी– पिछले सीजन में आईपीएल डेब्यू कर चर्चा में आने वाले वैभव सूर्यवंशी ने आईपीएल 2026 में तबाही मचा रखी है। सामने जसप्रीत बुमराह हों, भुवनेश्वर कुमार या पैट कमिंस, वैभव हवाई फायर करने में किसी भी गेंदबाज के साथ कोई भेदभाव नहीं कर रहे हैं। मौजूदा सीजन में अब तक खेले 13 मैच की 13 पारियों में वैभव ने 44.54 की औसत और 236.33 की स्ट्राइक रेट से 579 रन बनाए हैं। IPL 2025 में 35 गेंदों पर शतक जड़कर इतिहास रचने वाले वैभव ने 19वें सीजन में 36 गेंदों पर सैकड़े के आंकड़े को छुआ। वह अब तक 1 शतक के साथ ही 3 फिफ्टी भी ठोक चुके हैं।

ईशान किशन– अपनी कप्तानी में बिहार को सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी दिलाने वाले ईशान किशन ने इसके बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा। न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज और विश्व कप में ईशान ने जलवा बिखेरा। अब आईपीएल 2026 में ईशान छाए हुए हैं। शुरुआती कुछ मुकाबलों में सनराइजर्स हैदराबाद की कप्तानी करने वाले ईशान ने मौजूदा सीजन में अब तक 569 रन बनाए हैं। अब तक खेले 14 मैच में उनकी औसत 40.64 की और स्ट्राइक रेट 178.37 की रही है। ईशान 19वें सीजन में अब तक 6 फिफ्टी जड़ चुके हैं।

साकिब हुसैन– तेज गेंदबाज साकिब हुसैन ने अपनी रफ्तार से सभी को प्रभावित किया है। शुक्रवार को आरसीबी के खिलाफ मैच में साकिब ने विराट कोहली की पारी का अंत किया। यह उनके लिए किसी सपने के साकार होने जैसा था। मौजूदा सीजन में साकिब ने अब तक 10 मैच खेले हैं और 15 विकेट चटकाए हैं। अहम बात यह है कि उन्होंने इस सीजन खेले सभी मैच में कम से कम 1 विकेट तो लिया ही है। वह आईपीएल इतिहास में अपने डेब्यू के बाद से लगातार पहले 10 मैचों में विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बन गए हैं।